अज्झप्प-णीदी

[अध्यात्म-नीति]

:: कृतिकार ::

श्रुतप्रिय श्रमणरत्न १०८ श्री अप्रमितसागर जी

:: प्राकृतानुवाद ::

श्रुतसंवेगी श्रमणरत्न १०८ श्री आदित्यसागर जी

:: प्रकाशक ::

समर्पण समूह, भारत

जैनं वचनं सदा वंदे

आशीषानुकंपा	:	शताब्दी देशनाचार्य 108 श्री विशुद्धसागर जी यतिराज
ग्रन्थ	:	अज्झप्प-णीदी [अध्यात्म-नीति]
कृतिकार	:	श्रुतप्रिय श्रमणरत्न श्री अप्रमितसागर जी मुनिराज
प्राकृतानुवाद एवं संपादन	:	श्रुतसंवेगी श्रमणरत्न श्री आदित्यसागर जी मुनिराज
पूर्णावलोकन	:	सहजानंदी श्रमणरत्न श्री सहजसागर जी मुनिराज
संस्करण	:	प्रथम : 1008 प्रति / 2024
पुण्यार्जक	:	श्रीमान रमेशकुमार-सावित्रीदेवी, नितेश, विकास-शालू, अर्हम, सक्षम सेठी, समस्त सेठी परिवार, भीलवाड़ा, राजस्थान
प्रकाशन एवं प्राप्ति स्थान	:	समर्पण समूह, भारत भोपाल – 91790-50222 जबलपुर – 98276-07171 इन्दौर – 98260-10104 इन्दौर – 94253-16840 भीलवाड़ा – 63766-49881
मुद्रण	:	अंकित जैन शास्त्री मड़देवरा सागर (मध्य प्रदेश) फोन : 8302070717 मो. : 9755286521

शुभाशीष

भारतभूमि अध्यात्म की पावनभूमि है; यहाँ तीर्थंकर भगवन्तों ने जन्म लेकर सम्पूर्ण लोक को **'दिव्य-देशना'** की पवित्र भेंट प्रदान कर जन-जन का कल्याणमार्ग प्रशस्त किया। प्राणिमात्र को भगवानात्मा का संदेश दिया है।

जगति का परमाणु-परमाणु स्वाधीन है। बंध में भी अबंध का बोध कराकर सर्वोदयतीर्थ को जयवन्त किया। जहाँ पर सम्पूर्ण-भव्यों के पुण्य का उदय होता है; ऐसा सर्वोदयतीर्थ तीर्थंकरों का है। इसी तीर्थ की प्रभावना में संलग्न **श्रमण मुनि श्री अप्रमितसागर जी परम-आस्तिक्य गुण-सम्पन्न, गुरु भाईयों के साथ लघुता से दुग्ध-मिश्रीवत जीवन जी रहे हैं, साथ ही श्रुतसेवा में भी स्व-समय का सम्यक्-उपयोग कर रहे हैं।**

आपकी श्रुतसाधना, आत्म-आराधना इसी प्रकार सहजता के साथ आदित्य से प्रकाशमान हो, यही शुभाशीष.....। आपके द्वारा सृजित ''**अध्यात्म-नीति**'' कृति विश्व कल्याण करे।

अष्टापद तीर्थ **दिगम्बराचार्य विशुद्धसागर**
गुरुग्राम (हरियाण), भारत
11 जनवरी 2024

आद्य-कथन

—प्राकृत मनीषी श्रुतसंवेगी
श्रमण आदित्य सागर जी

सनातन श्रमण संस्कृति आध्यात्मिकवाद में विश्वास करती है और आधूनिकवाद से अत्यन्त दूर ही रहना पसंद करती है। **सनातन दिगम्बर जैन श्रमण संस्कृति के रक्षण तथा संवर्धनार्थ पुरातत्त्व, साहित्य, श्रमण एवं श्रावकों की समुपस्थिति परमावश्यक अंग है।** पुरातत्त्व का निर्माण एवं संरक्षण करना श्रावकों का कर्तव्य है। इस महत्त्वपूर्ण कार्य में प्रेरणा एवं मार्गदर्शन करना श्रमणों का कर्तव्य है। दूसरी ओर सत्साहित्य का निर्माण करना श्रमणों का कार्य है और उसका प्रकाशन तथा संरक्षण करना श्रावकों का कार्य है।

साहित्य जगत् के कोहिनूर कुशल-चिंतक मम शिक्षा-दीक्षा गुरु शताब्दी देशनाचार्य संस्कृति-शासनाचार्य 108 श्री विशुद्धसागर जी सनातन श्रमण संस्कृति के परम-संरक्षक हैं। कहते हैं—**''गुरु की छवि शिष्य में झलकती है''। श्रेष्ठ-गुरु के श्रेष्ठ-शिष्य ममानुज गुरु-देव का अनुशरण-अनुकरण करते हैं, तभी तो श्रुतप्रिय श्रुतसृजक श्रमण अप्रमितसागर जी** ने इस लघुकाय बहुप्रमेय-समन्वित महानकृति ''अध्यात्म-नीति'' का सृजन किया और मुझ अल्पश्रुतज्ञ को इस ग्रन्थ के प्राकृतानुवाद का अमिट-सौभाग्य भी प्रदान किया। यद्यपि आप स्वयं प्राकृत भाषा में मर्मज्ञ हैं तथापि भरतवत् अग्रजश्रमण को बहुमान देने हेतु आपने यह मंगलकार्य मुझे देकर कृतज्ञ किया है।

मुनिवर बहुप्रतिभा सम्पन्न, बहु-परिश्रमी, रसपरित्याग-तपश्चरण में लीन, गुरु-गरिमा को वर्धमान करनेवाले अभिजात अंतेवासिन् हैं। आप इसी प्रकार माँ शारदे माँ जिनवाणी के आँगन को नवीन-नवीन चिंतन-पुष्पों से सुवासित करते रहें। यह मेरी आपके प्रति मंगल-भावना है। साथ ही साथ इस ग्रन्थ के प्रकाशनार्थ अपनी चंचला लक्ष्मी का प्रयोग करनेवाले गुरुचरणानुरागी गुरुभक्तों को भी बहुत-बहुत आशीर्वाद है। आप भी इसी तरह जिनवचनों को प्रकाशमान करते रहें।

॥ णमो णमो सिद्ध-साहूणं ॥

14/01/2024
शीतवाचना योग
हिम्मतनगर, गुजरात

विशुद्धपदाकांक्षी
लघुश्रमण

मेरे शब्द

प्रत्येक प्राणी अपने सुख के लिये प्रयत्नशील है, लेकिन एक भूल ये जीवात्मा सदा से ही करता आया है—जिसे अपना मानना चाहिये था उस पर दृष्टि न ले जाकर वह देह और देह से जुड़ने वालों को ही अपना मानता आया है; इसी कारण हमेशा दुःख ही पाता आया है। जबकि अपने सुख की प्राप्ति के लिये आवश्यकता होती है आध्यात्मिक जीवन जीने की।

इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुये कि—अपना सुख अपने को मिले; मैंने यह ''**अध्यात्म-नीति**'' नामक लघुकाय ग्रंथ का सृजन किया है। **मेरे अग्रज प्राकृत मनीषी, प्राकृत विद्याव्यसनी श्रुतसंवेगी श्रमण आदित्यसागर जी मुनिराज ने** मुझ अल्पज्ञ के अल्प निवेदन पर ही इस कृति को तीर्थंकर भगवंतों की मूलभाषा प्राकृतभाषा में अनुवाद करके जिनशासन के सरस्वती भण्डार में श्री वृद्धि की है और कृति को अनुपम रूप प्रदान किया है।

इस कृति को मेरे आराध्य शिक्षा-दीक्षा दाता **परम पूज्य शताब्दी देशनाचार्य श्री 108 विशुद्धसागर जी यतिराज** का बृहद् हस्तों से आशीर्वाद संप्राप्त हुआ है।

इस कृति के चिंतन, मनन, मंथन और अनुभवन से आपके जीवन में आध्यात्मिकता उद्घाटित हो, यही मेरी मंगल भावना है!!!

॥ विशुद्धात्मने नमः ॥

दिनांक : 11.01.2024
हिम्मतनगर (गुजरात)

विशुद्धगुणाकांक्षी
श्रुतप्रिय श्रमण अप्रमितसागर

सुदपिय-समण-अपमिदसायर-विरइदा

अज्झप्प-णीदी

श्रुतप्रिय श्रमण अप्रमितसागर विरचित

अध्यात्म-नीति

मंगलाचरणं
(आर्या-गाथा)

चंद-संति-अदिवीरं, णमिऊणं तिजोग-सुद्ध-भावेण।
वुच्चमज्झप्प - णीदिं, सयल - पाव - णास - करणट्ठं।।

भावार्थ—

श्री 1008 चंद्रनाथ स्वामी, श्री 1008 शांतिनाथ स्वामी और श्री 1008 महावीर स्वामी को त्रियोग (अर्थात् मन, वचन और काय) तथा शुद्धभाव से नमस्कार करके सकल पापों के नाश करने के लिये मैं (श्रुतप्रिय श्रमण अप्रमितसागर) अध्यात्म-नीति को कहता हूँ।

अध्यात्म-नीति - 1

संसारदो णिक्कासणे सारो त्थि, णेव संसारे।।

सार संसार से पार होने में है, संसार में नहीं।

अध्यात्म-नीति - 2

आदलक्खं विणा आदसरूवलाहो णत्थि।।

आत्मलक्ष्य के बिना नहीं मिलता आत्मस्वरूप।

अध्यात्म-नीति - 3

कारणं कारणं जाणेहि, कज्जं तुज्झ कारणमेव होदि।।

कारण को कारण समझो, कार्य तेरे कारण ही हो रहा है।

अध्यात्म-नीति - 4

अभिण्णे भिण्णं णत्थि, भिण्णे अभिण्णं णत्थि, अभिण्णे अभिण्णं जाणेहि।।

अभिन्न में भिन्न नहीं, भिन्न में अभिन्न नहीं, जानो अभिन्न में अभिन्न को।

अध्यात्म-नीति - 5

सरूवदिट्ठीए सिद्धसमाण-सरूवो पसज्जेदि।।

स्वरूपदृष्टि से मिलता है, सिद्धों का स्वरूप।

अध्यात्म-नीति - 6

जदा उवओगो णियोवओगे आगमेहिदि, तदा उवओगी उवओगे आगमेहिदि।।

उपयोगी उपयोग में तब आयेगा, जब उपयोग निज-उपयोग में आयेगा।

अध्यात्म-नीति - 7

तेण मिलेहि जो अण्णे ण मिलेज्जा।।

मिलो उससे जो किसी में मिलता न हो।

अध्यात्म-नीति - 8

उवओगिम्हि वहेहि उवओगं, ण दु अणुवओगिम्हि।।

अनुपयोगी में नहीं, उपयोगी में उपयोग ले जाओ।

अध्यात्म-नीति - 9

सगीय-सुहं सगं हि समया, तत्थेव गवेस।।

अपना सुख अपने ही पास है, खोजो वहीं।

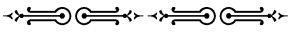

अध्यात्म-नीति - 10

मिच्छा-परिणामाणं हि परिणामं, तम्हा दु संसारे परिणामी।।

गलत परिणामों का ही परिणाम है, इसलिये परिणामी संसार में है।

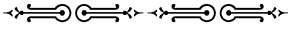

अध्यात्म-नीति - 11

अहं-सद्दे अहं णत्थि, अहं तु अहमेव अम्हि।।

मैं शब्द में मैं नहीं, मैं मैं ही हूँ।

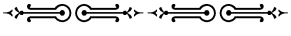

अध्यात्म-नीति - 12

जम्मणं तु पज्जायस्स, अजम्मणो हं।।

जन्म पर्याय का होता है, मैं तो अजन्मा हूँ।

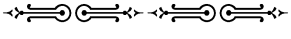

अध्यात्म-नीति - 13

जं जाणेहि तम्हि जीवत्तं णत्थि, णायगं जाणेहि।।

जिसको जानने में लगे हो उसमें जान ही नहीं है, जानो जाननहारे को।

अध्यात्म-नीति - 14

सगम्हि मज्जिय सगं पावेहि।।

अपने में जाकर पाओ अपने को।

अध्यात्म-नीति - 15

जम्हि ममत्तं तम्हि सगीय-जणा संति, ण दु सगप्पा।।

जिसमें अपनापन है उसमें अपने हैं, अपन नहीं।

अध्यात्म-नीति - 16

सगो हि सगीया, णो कोवि सगीयो।।

अपन ही अपने हैं, अपना कोई भी नहीं।

अध्यात्म-नीति - 17

तुमं पदरागो वि मोक्खपहादो विहडेहिसि।।

पद का राग भी कर देगा मोक्षपथ से दूर तुझे।

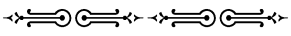

अध्यात्म-नीति - 18

संबंधिणो समया अणेगहुत्तं गच्छीअ, अदु सगं समया गच्छ।।

अपनों के पास कई बार गये हो, अब जाओ अपने पास।

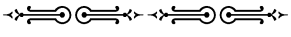

अध्यात्म-नीति - 19

सगं सगादो तुमं हि विहडेसि, ण दु संबंधिणो।।

अपने नहीं, अपन ही करते स्वयं को अपने आप से दूर।

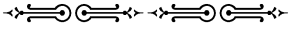

अध्यात्म-नीति - 20

रिद्धि-सिद्धि-पसिद्धीए णत्थि आदसिद्धी।।

ऋद्धि, सिद्धि और प्रसिद्धी में नहीं है आत्मसिद्धि।

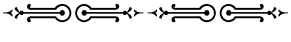

अध्यात्म-नीति - 21

सगीयस्स झाणेहि ण दु संबंधिणो।।

अपनों का नहीं अपना ही ध्यान लगाओ।

अध्यात्म-नीति - 22

संबंधिणो कदावि ण भासीअ– ममं गेण्हेहि, तुमं हि गेण्हेसि।।

अपनों ने कभी नहीं कहा मुझे अपनाओ, अपन ही अपनाते हैं।

अध्यात्म-नीति - 23

अवरस्स परिमाणा किंचिवि सगीया णत्थि, सग-परिणामा हि सगीया।।

अपने परिणाम ही अपने हैं, पर के परिणाम किंचिद् भी अपने नहीं।

अध्यात्म-नीति - 24

सग-चिंतगो हि सगत्तो संबंधिणो विहडेदि।

अपना ख्याल रखने वाला ही कर पाता है अपनों को अपने से दूर।

अध्यात्म-नीति - 25

जं तुमं तुमादो समिल्लेदु, तं हि तच्चणाणं।।

तत्त्वज्ञान वही है, जो आपको आपसे मिला दे।

अध्यात्म-नीति - 26

णायग-हवणस्स उज्जमं कुणेहि, ण दु णायग-हवणस्स।।

नायक नहीं, ज्ञायक बनने का उद्यम करो।

अध्यात्म-नीति - 27

सदे असदस्स कप्पणा सच्चस्स अणभिण्णत्तं दरिसेदि।।

सत् में असत् की कल्पना सत्य की अनभिज्ञता को प्रदर्शित करती है।

अध्यात्म-नीति - 28

आणंदकंदो अंतसे खलु, णेव बाहिरे।।

आनंदकंद अंदर ही है, बाहर किंचित् भी नहीं।

अध्यात्म-नीति - 29

अवेदी हं, ण दु वेदी; एवमेव सच्चसरूवो।।

मैं वेदी नहीं, अवेदी हूँ; यही सत्यस्वरूप है।

अध्यात्म-नीति - 30

अक्खो णिरक्खरो, तस्स छरणं णो हवीअ, णेव होदि, ण दु हविस्सदि।।

अक्ष निरक्षर है, उसका क्षरण न हुआ, न होता है, न ही होगा।

अध्यात्म-नीति - 31

अवर-संपक्कादो तुमं सगेण ण संमिल्लेसि, अदु संमिल्लेहि सगेण।।

दूसरों से मिलने से आप अपने से नहीं मिल पाते, अब मिलो आप अपने से।

अध्यात्म-नीति - 32

करणेण चरणं होदि णिम्मलं, कुण करणं णिम्मलं।।

चरण, करण से निर्मल होता; करण को निर्मल करो।

अध्यात्म-नीति - 33

देहाहिणंदणं ण कारेदि वंदणं, आदाहिणंदणं कुणेहि।।

देह का अभिनंदन वंदन नहीं कराता, कर आत्म-अभिनंदन।

अध्यात्म-नीति - 34

तुज्झ भावेसुंतो हि भवविणासो संभवो।।

भव का विनाश आपके भावों से ही संभव है।

अध्यात्म-नीति - 35

आदमंदिरे अत्थि आणंदो, ण दु मंदिरे।।

आनंद मंदिर में नहीं, आत्ममंदिर में है।

अध्यात्म-नीति - 36

सव्वेसुं उवओगं ण णिज्जित्ता, सगीय-उवओगं सगोवओगे णिज्जेहि।।

सब में उपयोग न ले जाकर, अपना उपयोग अपने उपयोग में ले जाओ।

अध्यात्म-नीति - 37

चंदण-तिलगादो देह-पदिट्ठा वड्ढेदि, किण्णु रयणत्तय-तिलगादो आद-पदिट्ठा य।।

चंदन के तिलक से देह की प्रतिष्ठा बढ़ती है, परन्तु रत्नत्रय के तिलक से आत्मा की प्रतिष्ठा बढ़ती है।

अध्यात्म-नीति - 38

संसारावत्थं णस्सेदुं हुव ववट्ठिदो, मा कुण विवत्थं।।

संसार अवस्था को नष्ट करने के लिये व्यवस्थित हो जाओ, व्यवस्था मत बनाओ।

अध्यात्म-नीति - 39

णियप्पगेहे मज्जित्ता हि परगेहं मुच्चेदि।।

स्वात्मगृह में जाकर छूटता है, परगृह।

अध्यात्म-नीति - 40

अग्गहं णस्सित्ता संसारगेहं णस्सेहि।।

आग्रह मिटाकर मिटाओ संसारगृह।

अध्यात्म-नीति - 41

उवओगी उवओगे उवओगस्स उवओगं कुणेदु, पुण उवओगी सजोगी होदूणं अजोगी होदि।।

उपयोगी उपयोग में उपयोग का उपयोग करे, तो उपयोगी सयोगी बन अयोगी बने।

अध्यात्म-नीति - 42

णिद्दोस-हवणत्थं णियभावा देहि दोसं, ण दु दव्वक्खेत्तकालं च।।

निर्दोष बनने के लिये, दोष दो निज भावों को, द्रव्य क्षेत्र और काल को नहीं।

अध्यात्म-नीति - 43

अवराणं समस्साओ सुणिय सगीय-समस्साओ णवि वड्ढेहि, सुही हवेहि।।

दूसरों की समस्याओं को सुनकर अपनी समस्याओं को न बढ़ाओ सुखी हो जाओ।

अध्यात्म-नीति - 44

सव्वे तुमं सगीयो मण्णेज्जा, किण्णु तुमं कंचिदवि सगीयो ण मण्णेहि।।

सब आपको अपना मानें, परन्तु आप अपना किसी को न मानें।

अध्यात्म-नीति - 45

जदा अणिच्चं णिच्चो मुंचेदि, तदेव णिच्च-सिद्धाणं मज्झे णिच्चो वसेदि।।

जब अनित्य को नित्य छोड़कर जाता है, तब ही नित्य सिद्धों के बीच नित्य रह पाता है।

अध्यात्म-नीति - 46

अवर-णाणेण कट्ठं वड्ढेदि,सगीय-णाणेण कट्ठं णस्सेदि।।

दूसरों को जानने से कष्ट बढ़ता है, अपने को जानने से कष्ट नशता है।

अध्यात्म-नीति - 47

जदा जीवो सगं विसरदे, तदेव संबंधिणो समया गच्छदे।।

जब जीव अपने को भूल जाता है, तब ही अपनों के पास जाता है।

अध्यात्म-नीति - 48

जत्थ जीवप्पा सुद्धेदि, तमेव जाणेहि सगीय-गेहं, तत्थेव सगीय-हिदं मण्णेहि।।

जहाँ जीवात्मा शुद्धि को प्राप्त हो, वही अपना घर समझे वहीं अपना हित समझे।

अध्यात्म-नीति - 49

लोयकल्लाणत्थं मा विसर सग-कल्लाणं।।

लोक कल्याण के पीछे अपना कल्याण मत भूलो।

अध्यात्म-नीति - 50

परसंपत्ति-रागे सग-आवत्तिं मा वड्ढेहि, णं सव्वसंपत्तीओ दु तुं समया एव।।

सर्वसंपत्ति तो तेरे पास है, परसंपत्ति के राग में अपनी आपत्ति न बढ़ाओ।

अध्यात्म-नीति - 51

हे जीव! सदा जीवंतत्थं जीवस्स अंतं धम्मं च जाणेहि।।

हे जीव! जीवन्त रहने को सदा जीव के अन्त (धर्म) को समझो।

अध्यात्म-नीति - 52

संसारिणो पस्सित्तु हि मोक्खत्थी संसारत्तो ऊसरेदि।।

संसारियों को देखकर ही मोक्षार्थी संसार से दूर होता है।

अध्यात्म-नीति - 53

पडिबुद्धा अण्णं दुही पस्सित्ता वि ण होंति दुही।।

दु:खी देखकर किसी को भी, दु:खी नहीं होते प्रतिबुद्ध जन।

अध्यात्म-नीति - 54

सुजोग्ग-हवणस्स जोग्ग-वियार-कज्जं चेव आवस्सगं।।

सुयोग्य बनने के लिये आवश्यक ही है, योग्य विचार और योग्य कार्य।

अध्यात्म-नीति - 55

जोग्गकज्जकरणस्स पुव्विं सगीय-जोग्गत्तं अवस्सं जग्गेहि।।

योग्य कार्य करने के पूर्व अपनी योग्यता अवश्य जगायें।

अध्यात्म-नीति - 56

एरिसं रूवगं रएहि जेण तुज्झ रूवगो तुज्झ पुराणो सिज्झेहि।।

नाटक ऐसा रचाओ कि आपका नाटक आपका पुराण बन जाये।

अध्यात्म-नीति - 57

तुज्झ सड्ढा-समप्पणं च तुमं पडि होज्जा, दु सिद्धाणं पुहुत्तं झूरेहि।।

आपकी श्रद्धा और समर्पण आपके प्रति हो जाये, तो सिद्धों के बीच का अंतर समाप्त हो जाये।

अध्यात्म-नीति - 58

सगीय-समयं सगो हि जाणिज्जदे, किण्णु सगस्सेव।।

अपना समय अपन ही जान सकते, पर अपना ही।

अध्यात्म-नीति - 59

मोक्ख-लक्खं संपुण्णत्थं अक्खे लक्खं कुणेहि।।

मोक्ष-लक्ष्य पूर्ण करने के लिये अक्ष पर लक्ष्य रखो।

अध्यात्म-नीति - 60

सगं जाणित्ता अवर-णाणस्स दोसं पगुणीयारेहि।।

भूल सुधार लो पर को जानने की, स्वयं को जानकर।

अध्यात्म-नीति - 61

सगीय-हवणत्थं आगच्छीअ, अवराणं होदूणं हि मरिज्जा।।

अपना बनने के लिये आये थे दूसरों के बनकर ही मर गये।

अध्यात्म-नीति - 62

जदा अप्पत्तो कम्माणं सदा पुहुत्तं होहिदि, तदेव तवस्सा परिपुण्णा होहिदि।।

तपस्या तभी पूरी होगी, जब आत्मा से कर्मों की हमेशा के लिये दूरी होगी।

अध्यात्म-नीति - 63

इंदियसुहे दुक्खमेव ति जाणित्ता जीवणारंभं कुणेहि, तुमं सग-सुह-लाहो सिग्घं होहिसि।।

इंद्रिय सुख में दु:ख ही है, ऐसा मानकर जीना प्रारंभ कर दो, आपका सुख आपको मिलने में देर नहीं लगेगी।

अध्यात्म-नीति - 64

एगहुत्तं सगेण सह वसेहि, पुण केणचिद सह णिवसणस्स आवस्सगत्तं ण होज्जा।।

बस एक बार अपने साथ रह लो तो किसी के साथ रहने की जरूरत नहीं पड़ेगी।

अध्यात्म-नीति - 65

सव्वं सगीयस्स किच्चा संसार-लाहो, सगं सगस्स कुणेहि; सग-सुह-लाहो होहिदि।।

सबको अपना बनाकर संसार मिलेगा, स्वयं को अपना बना लो अपना सुख मिलेगा।

अध्यात्म-नीति - 66

जीवस्स वत्तित्त-उण्णयणं तस्स सहावेण हु संभवं।।

व्यक्ति के व्यक्तित्व का निखार उसके स्वभाव से ही संभव है।

अध्यात्म-नीति - 67

परम्हि णिम्ममत्त-भावो हि णियप्पसुह-हेदू।।

पर में निर्ममत्व भाव का होना ही स्वात्मसुख का हेतू है।

अध्यात्म-नीति - 68

णिय-रमणादो णियप्पसुहं पसज्जदि, ण दु पर-रमणादो।।

पर में नहीं, निज में खोने से मिलता है स्वात्मसुख।

अध्यात्म-नीति - 69

विसयाणुभूदीए सुहाणुभूदि-परिकप्पणा विहा, सुहं तु मेत्तं आदाणुभूदीए हि संभवं।।

विषयानुभूति में सुखानुभूति की परिकल्पना व्यर्थ ही है, सुख तो केवल आत्मानुभूति से ही संभव है।

अध्यात्म-नीति - 70

आदजागरणं कुणेहि, णियमेण होहिदि कम्म-णिरायरणं।।

करो आत्मजागरण, निश्चित होगा कर्मों का निराकरण।

अध्यात्म-नीति - 71

सग-मेलणत्थं सगं समया गमणस्स आवस्सगत्तं, ण दु संबंधित्तो पुहुत्तं ति।।

अपने से मिलने के लिये अपनों से दूर नहीं, अपने पास जाने की जरूरत है।

अध्यात्म-नीति - 72

अज्जपज्जंतं अवरं जाणेसि, जाणेहि सगं।।

जाना पर को अभी तक, जानो अपने को।

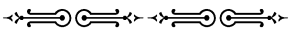

अध्यात्म-नीति - 73

अवरा पस्सित्ता मणो छुब्भेदि, सग-दंसणेण मणो विसुज्झेदि।।

दूसरों को देखकर मन विचलित हो जाता है, अपने को देखने से मन निर्मल हो जाता है।

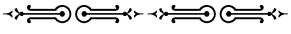

अध्यात्म-नीति - 74

कम्म-मुत्ती आद-खादीए हि संभवा, ण दु देह-खादीए।।

कर्म मुक्ति देह-ख्याति से नहीं, आत्मख्याति से ही संभव है।

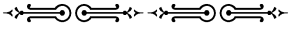

अध्यात्म-नीति - 75

तुज्झ चित्ते तुज्झ चित्तं णत्थि, अचित्तसहावी-आदा पस्सेज्जा।।

आपके चित्त में आपका चित्र नहीं, अचित्र-स्वभावी आत्मा दृष्टिगोचर होना चाहिये।

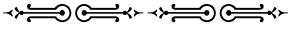

अध्यात्म-नीति - 76

देह-अत्थित्तस्स चरिचा-चरिया य णियप्पं संसारी हि करेदि।।

देह अस्तित्व की चर्चा और चर्या, स्वात्मा को संसारी ही बनायेगी।

अध्यात्म-नीति - 77

दुह-सुहाणि कोवि ण विभजिज्जदे, णवरि ताणि तुमम्हि एव।।

दु:ख हो या सुख उसे कोई बाँट नहीं सकता, क्योंकि वह आपके भीतर ही है।

अध्यात्म-नीति - 78

सगीय-ममत्तं पि संसारकारणं।।

अपना अपनापन भी संसार का कारण है।

अध्यात्म-नीति - 79

तुमं सुह-साहणेसुं सुहं गवेसेसि, किण्णु सुहं तु सुज्झे हि अत्थि।।

आप सुख के साधनों में सुख ढूँढ़ते हो, जबकि सुख तो साध्य में ही है।

अध्यात्म-नीति - 80

संबंधीदो सगीय-पुहुत्तं हि मुत्ति-कारणं।।

अपनों से अपना अलगाव ही मुक्ति का कारण है।

अध्यात्म-नीति - 81

कुण सग-चिंतणं ण दु संबंधीणं चिंतणं, हुव चिरंतणं।।

अपनों का नहीं अपना चिंतन करें, चिरंतन बनें।

अध्यात्म-नीति - 82

अवरेसुं दुह-दाण-सामत्थं हविज्जदे, किण्णु दुही-करणस्स सामत्थं णत्थि।।

दुःख देने की सामर्थ्य दूसरों में हो सकती है, परन्तु दुःखी करने की नहीं।

अध्यात्म-नीति - 83

थिरचित्तवंतो भजेदि थिर-णियप्प-सुहं।।

स्थिर चित्त धारी को ही मिलता है, स्थिर स्वात्म-सुख।

अध्यात्म-नीति - 84

सगचिंतणे सगीय-चिंतणं होदु, दु चेदणो होदु असरीरी।।

अपने चिंतन में अपना चिंतन हो, तो चेतन बे-तन हो।

अध्यात्म-नीति - 85

कहं पि होंतु परिट्ठिदीओ, तुमं णियप्पम्हि थिरो होदु, कम्मट्ठिदीओ सयं हि अथिराओ होहिंति।।

परिस्थितियाँ कैसी भी हों आप स्वात्मा में स्थिर रहना, कर्म-स्थितियाँ स्वयमेव अस्थिर हो जायेंगी।

अध्यात्म-नीति - 86

धम्मी हि संसार-तावं णस्सेदि।।

धर्मी ही संसार की गर्मी को दूर कर सकता है।

अध्यात्म-नीति - 87

आदसुही-हवणत्थं आदमुही हुवेहि।।

आत्मसुखी बनने के लिये बनो आत्ममुखी।

अध्यात्म-नीति - 88

आवस्सगे रमित्ता जीवेहि, तुमं णूणं सगं लहिहिसि।।

आवश्यक में लीन होकर जीना, अवश्य पाओगे अपने को।

अध्यात्म-नीति - 89

आदत्थत्थं आदवीसासो परमावस्सगो।।

आत्मस्थ होने के लिये आत्म-विश्वास परमावश्यक है।

अध्यात्म-नीति - 90

अवर-सहाव-परियट्टण-पयासो णिरत्थगो एव, तम्हा सग-सहावं पलट्टिय सग-जीवणं कुण सत्थगं।।

दूसरों का स्वभाव बदलने का प्रयास निरर्थक ही है, इसलिये सार्थक करो अपना जीवन अपना स्वभाव बदलकर।

अध्यात्म-नीति - 91

अकिंचिदयरं जीवणं हि किदकिच्चो करेदि।।

कुछ नहीं करने वाला जीवन ही कृतकृत्य बनाता है।

अध्यात्म-नीति - 92

किंचण करणस्स इच्छा हि संसारकारणं।।

कुछ करने की इच्छा ही संसार का कारण है।

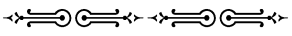

अध्यात्म-नीति - 93

णिएण पीदी हि लोयादो विगाविय लोय-पीदिं दावेहिदि।।

निज से प्रीति ही जगत से दूर कराकर जगत् की प्रीति दिलायेगी।

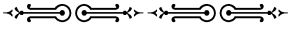

अध्यात्म-नीति - 94

बंधेहि सग-लक्खं सगं पडि।।

अपना लक्ष्य बाँधो अपनी ही ओर।

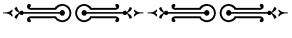

अध्यात्म-नीति - 95

साहणा सज्झलाहट्ठं अत्थि, ण दु साहणलाहट्ठं।।

साधना साध्य पाने के लिये है, साधन पाने के लिये नहीं।

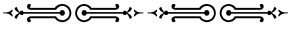

अध्यात्म-नीति - 96

तत्थ पुण-पुण किमु गच्छेसि, जत्थ सग-गेहं हि णत्थि।।

बार-बार क्यूँ जाते हो वहाँ, जहाँ अपना घर है ही नहीं।

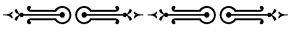

अध्यात्म-नीति - 97

सगं समया अवक्कमेहि, एवमेव संबंधीदो पुहुत्तस्स उवाओ।।

अपनों से दूर जाने का एक ही तरीका है, अपने पास चले जाओ।

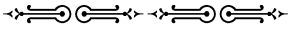

अध्यात्म-नीति - 98

सगेण सह संवादेहि, पुण सगो कदावि सगादो पुहं ण गच्छेहिदि।।

अपने से बात तो करो, फिर देखो अपन कभी अपने से दूर ही नहीं जायेंगे।

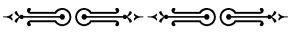

अध्यात्म-नीति - 99

तुमं छलमाणो तुममेव, णो अवरो कोवि।।

आपको ठगने वाले आप ही हो, कोई दूसरा नहीं।

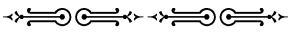

अध्यात्म-नीति - 100

चित्ताणि कदावि ण भासे—सगीय-चित्तं मलिणेहि, तुमं हि मलिणेसि।।

चित्रों ने कभी नहीं कहा कि अपना चित्त बिगाड़ो, आप ही बिगाड़ते हो।

अध्यात्म-नीति - 101

तुमं अवरेहिं सह वसेसि, तम्हा अवरा तुमए सह वसेंति।।

आप दूसरों के साथ रहते हो, इसलिये दूसरे आपके साथ रहते हैं।

अध्यात्म-नीति - 102

ण दु पुण्णं मज्झं, णेव पावं; मज्झं तु अहमेव।।

मैं मेरा ही हूँ, न पुण्य मेरा न पाप मेरा।

अध्यात्म-नीति - 103

पच्चुप्पण्ण-मदिस्स दिट्ठी हि अणुप्पण्णे गच्छेदि।।

अनुत्पन्न पर दृष्टि जाती है, प्रत्युत्पन्नमति की ही।

अध्यात्म-नीति - 104

विवण्ण-मदिस्स दिट्ठी हि उप्पण्णे गच्छेदि।।

उत्पन्न पर दृष्टि जाती है, विपन्नमति की ही।

अध्यात्म-नीति - 105

णियप्प-दव्वेण पीदी खलु सम्म-णीदी, गवेस एरिसं रीदिं।।

स्वात्म-द्रव्य से प्रीति करना ही सच्ची नीति है, खोजो ऐसी रीति।

अध्यात्म-नीति - 106

संबंधीहिं संबंधेण बंधो बंधेदि, सगेण संबंधेण बंधो थंमेदि।।

अपनों से संबंध बनाने से बंध बंध जाता है, अपने से संबंध बनाने से बंध बंद हो जाता है।

अध्यात्म-नीति - 107

तुमं दुक्ख-दायगेण सह सदा वसेसि, तम्हा सगीय-सुहं तुमं सयमेव हरेसि।।

आप दु:ख देने वाले के साथ हमेशा रहते हो, इसलिये अपना सुख आप स्वयं ही हरते हो।

अध्यात्म-नीति - 108

ईसा पहाणो अवगुणो, तुमं ईसित्ता सयमेव सगीय-गुणा हरेसि।।

ईर्ष्या महान् अवगुण है, आप ईर्ष्या करके स्वयं ही अपने गुणों को हरते हैं।

अध्यात्म-नीति - 109

संबंधि-सुही होंतु, एस चिंतिय दुही किमु हवसि, सव्वस्स सगीय-सगीय-कम्मं।।

अपने सुखी रहें ऐसा सोचकर दु:खी क्यों होते हो सबका अपना-अपना कर्म है।

अध्यात्म-नीति - 110

अथिर-चित्ते थिर-सहाव-कप्पणा अथिरा।।

अस्थिर चित्त में स्थिर स्वभाव की कल्पना अस्थिर है।

अध्यात्म-नीति - 111

सगेण सह वसित्ता सगीय-सुहं गेण्हेहि।।

अपना लो अपना सुख अपने ही साथ रहकर।

अध्यात्म-नीति - 112

आदखेत्ते वसित्ता आदतित्थस्स अपुव्व-वंदणं कुणेहि।।

आत्मक्षेत्र में रहकर करो, आत्म-तीर्थ की अपूर्व वंदना।

अध्यात्म-नीति - 113

जदि तुमं पुण्णप्पा मा हुव गव्विदो, णवरि कस्सचिदवि पुण्णं ण होदि सासयं।।

पुण्यात्मा हो तो इतराना मत, क्योंकि पुण्य किसी का भी शाश्वत नहीं रहता।

अध्यात्म-नीति - 114

अविज्जाए सव्वणासत्थं णियप्प-विज्जा-मणणं कुणेहि।।

अविद्या के सर्वनाश करने के लिये स्वात्म-विद्या का मनन करो।

अध्यात्म-नीति - 115

णिग्गुणी-हवणत्थं णियप्प-गुण-चिंतणं कुणेहि।।

निर्गुणी बनने के लिये स्वात्मगुणों का चिंतवन करो।

अध्यात्म-नीति - 116

अवरे आदसंतिं अण्णेसेसि, गवेसणे सदि णवि लहीअ; णवरि सा अवरे ण होदि।।

ढूँढ़ता रहा पर में आत्मशांति, ढूँढ़े न मिली; क्योंकि वह पर में होती ही नहीं।

अध्यात्म-नीति - 117

सग-अण्णेसणं संबंधीणं मज्झे करीअ, पुण णाणं हुज्जा; संबंधीसुं ण होसि तुमं।।

अपनी खोज अपनों के बीच करने निकला तो पाया, अपन तो अपनों में होते ही नहीं।

अध्यात्म-नीति - 118

केवचिरं जिणालयत्थ-भगवदस्स पूयणं करिहिसि, णियप्पा खु भगवं; तं अच्चित्ता सग-कम्माणि हरेहि।।

जिनालय के भगवान की कब तक पूजा करोगे, स्वात्मा ही भगवान है उसकी पूजा करके अपने कर्म हर लो।

अध्यात्म-नीति - 119

जा सगीए दिट्ठी, सा हु सच्च-दिट्ठी।।

जो अपने पर दृष्टि है, वही है सच्ची दृष्टि।

अध्यात्म-नीति - 120

इदं देहं अणादिणा परगीयं, वयं इदं अणादिणा सगीयं मुणिय संसार-भमणं करेमो।।

यह देह अनादि से पराया ही है, हम इसे अनादि से अपना मानकर संसार में भ्रमण कर रहे हैं।

अध्यात्म-नीति - 121

देहे आददिट्ठी परभाव-दिट्ठी, ण दु सगीय-दिट्ठी।।

देह पर आत्मदृष्टि अपनी नहीं, परभाव दृष्टि है।

अध्यात्म-नीति - 122

पहु-चरणाणं फासेसि, किण्णु तेसिं सरिच्छं भाव-फासं अज्जपज्जंतं ण करीअ; तम्हा दु भमेसि।।

भगवान के चरणों का स्पर्श करते हो, लेकिन उनके सदृश भावों का स्पर्श आज तक नहीं किया, इसलिये तो भटकते फिर रहे हो।

अध्यात्म-नीति - 123

भगवद-मग्गे संचरित्तु हि भगवत्तं लहिहिसि, णेव इच्छित्तु।।

चाहकर नहीं, भगवान की राह पर चलकर ही भगवान बनोगे।

अध्यात्म-नीति - 124

आद-पूयगो होदूणं णियप्प-पुज्ज-वंदणं करेहि, पुणो बंधा थंभेहिह।।

स्व-आत्म-पूजक बनकर करो स्वात्मपूज्य की वंदना, फिर होंगे बंद बंधना।

अध्यात्म-नीति - 125

णियप्प-वेहव-लब्धीए परमावस्सगो परे णियत्त-कप्पणाचागो।।

स्वात्म-वैभव को पाने के लिये आवश्यक नहीं परमावश्यक है, पर में निजत्व की कल्पना त्यागना।

अध्यात्म-नीति - 126

णीदीए रीदीए पीदीए सह जीवेहि, किण्णु जदा आदपीदीए जीवेहिसि तदा भगवं होहिसि।।

जीओ चाहे नीति से रीति से और प्रीति से, लेकिन भगवान तब बनोगे जब जीओगे आत्मप्रीति से।

अध्यात्म-नीति - 127

सग-सुहं सगस्सेव, पर-सुहं सगीयभूदं ण कदावि आसी, णेव अत्थि, णेव होहिदि।।

अपना सुख अपना ही है, पर का सुख न कभी अपना था, न है, न ही होगा।

अध्यात्म-नीति - 128

सग-सत्ति-उवओगं सगस्स कुणेहि, आदसुह-उवलद्धी सदो होहिदि।।

अपनी शक्ति का उपयोग अपने लिये करो, आत्म-सुख की उपलब्धि स्वत: होगी।

अध्यात्म-नीति - 129

जं आदरिसे पस्सेसि तुमं, सो णो तुमं; णवरि तुमं तु णवि झलेदि।।

जिसे आदर्श में देखते हो वह आप नहीं हो, क्योंकि आप तो दिखते ही नहीं हो।

अध्यात्म-नीति - 130

दुक्खिद-दुहे ण हुव सुही दुही, सग-सुहे रमेहि दु णंतसुही हविस्ससि।।

दु:खिया के दु:ख में न सुखी हो, न ही दु:खी; अपने सुख में लीन रहो तो बनोगे अनंतसुखी।

अध्यात्म-नीति - 131

सग-जीवणं सगस्स एव, इदं परस्स मा खवेहि।।

अपना जीवन अपने लिये है, इसे मत खोना पर के लिये।

अध्यात्म-नीति - 132

अवरा सगेण जोयणादो, तुमं सगादो सग-पुहुत्तं वड्ढेसि।।

दूसरों को अपने से जोड़ने से, आप अपने से अपनी दूरी बढ़ाते हो।

अध्यात्म-नीति - 133

तुमं तुज्झ हि होसि, अवरं सगीयकरणस्स कप्पणा, तुज्झ विसालअमो दोसो।।

आप अपने ही हो, पर को अपना बनाने की कल्पना; आपकी सबसे बड़ी भूल है।

अध्यात्म-नीति - 134

जदि णिय-लीणत्तं इच्छेसि, दु ण सवत्थं रोच्छेहि णेव सव्वस्स।।

न शव के लिये रोना, न सबके लिये रोना; यदि चाहते हो निज में खोना।

अध्यात्म-नीति - 135

अवरं णियो, णियं अवरो मुणमाणो सगमूढत्त-गसिदो।।

पर को निज और निज को पर मानने वाला स्वमूढ़ता से ग्रसित है।

अध्यात्म-नीति - 136

जदा सगीय-देहं सगस्स णत्थि, पुणो संबंधि-देहं किमु सगीयं मण्णेसि।।

जब अपनी देह अपनी नहीं, फिर अपनों की देह को अपना क्यों मानते हो।

अध्यात्म-नीति - 137

असासदे दिट्ठिं णेत्तु हि अज्जपज्जंतं ण लहीअ सासदं।।

अशाश्वत पर दृष्टि ले जाकर ही तो नहीं पाया आज तक शाश्वत को।

अध्यात्म-नीति - 138

तुज्झ संबंधी सगीयो णत्थि, जदा अयं वीसासो जग्गेहिसि तदेव तुमं तुमं समया पहुप्पेहिसि।।

आपका अपना अपना नहीं, जिस दिन यह विश्वास जगा लोगे तभी आप अपने तक पहुँच पाओगे।

अध्यात्म-नीति - 139

संबंधीदो मेलणादो बीहेहि, संबंधिणो णूणं तुमं तुमादो फेडेज्जा।।

अपनों से मिलने से डरो, अपनों ने ही अपने को अपने से दूर किया है।

अध्यात्म-नीति - 140

आदसरूवलद्धी सरूवदंसणादो हि संभवा, णेव रूव-दंसणादो।।

आत्मस्वरूप की प्राप्ति रूप देखने से नहीं, स्वरूप देखने से ही संभव है।

अध्यात्म-नीति - 141

जदा आदस्स कम्मादो सदा पुहुत्तं होहिदि, तदा तवस्सा पुण्णा होहिदि।।

तपस्या पूरी तब होगी, जब आत्मा की कर्मों से हमेशा के लिये दूरी होगी।

अध्यात्म-नीति - 142

अंतोमुहुत्तं सगेण संवादेसि, तुमं तुज्झ होहिदि।।

अंतर्मुहूर्त बात कर लो अपने से, आप अपने ही होकर रह जाओगे।

अध्यात्म-नीति - 143

कम्मक्खय-उवसमणं च आद-रमणेण संभवं।।

कर्मों का उपशम, क्षय आत्मरमण से ही संभव है।

अध्यात्म-नीति - 144

कम्माणि भासीअ-तुमं करणं मुंचेहि, अहं तुमं मुंचेहिमि।।

कर्मों ने कहा तुम करना छोड़ दो, मैं तुम्हें छोड़ दूँगा।

अध्यात्म-नीति - 145

परभावेसुं भावा अहिगा वसंति, तम्हा जीवा संसारे अहिगा वसंति।।

परभावों में भाव अधिक रहते हैं, इसीलिये तो जीव संसार में अधिक रहते हैं।

अध्यात्म-नीति - 146

अज्झप्प-अणुहवणं अज्झप्पं, अज्झप्प-लेहण-सवण-भासणं च अज्झप्पं णत्थि।।

अध्यात्म लिखना, सुनना, बोलना अध्यात्म नहीं; लखना अध्यात्म है।

अध्यात्म-नीति - 147

संतसहावो हि साहु-सहावो होदि।।

शांत-स्वभाव ही संत का स्वभाव होता है।

अध्यात्म-नीति - 148

आददव्वम्हि कुण दिट्ठिं, णेव कुण दव्वम्हि दिट्ठिं।।

द्रव्य में दृष्टि न रखकर, आत्मद्रव्य पर दृष्टि रखो।

अध्यात्म-नीति - 149

वंदगेण बंधेहि, बंध-मुत्तो हुवेहि।।

वंदना करने वाले से बंध जाओ बंध से मुक्त हो जाओ।

अध्यात्म-नीति - 150

अविचल-सहावलद्धीए चंचलचित्तस्स वसीकरणं कुणेहि।।

अविचल स्वभाव पाने, करो चंचल चित्त का वशीकरण।

अध्यात्म-नीति - 151

णाणे णाणं जाणेहि, अण्णाण-पीडं णस्सेहिदि।।

ज्ञान में ज्ञान को जानो, अज्ञान-दर्द मिटेगा।

अध्यात्म-नीति - 152

सव्व-सुहं सगं समया, वयं पारिसे गवेसामो।।

सारा सुख अपने पास है, हम पास में ढूँढ़ते हैं।

अध्यात्म-नीति - 153

आदसुहं आद-अरिचाए भजेहिदि, ण दु आद-चरिचाए।।

आत्म-चर्चा से नहीं आत्म-अर्चा से मिलेगा, आत्मसुख।

अध्यात्म-नीति - 154

सग-वयणं सुणिय वेदिय सग-दिट्ठिं समं पडि कुणेहि।।

अपनी बात सुनकर, गुनकर करना अपनी दृष्टि अपनी ओर।

अध्यात्म-नीति - 155

चलिद-सहावे थिर-सहाव-दंसणं ण होदि।।

चलित-स्वभाव में स्थिर-स्वभाव का दर्शन नहीं होता।

अध्यात्म-नीति - 156

जीवणं धम्मो, ण दु सिक्खणं।।

सीखना नहीं, जीना धर्म है।

अध्यात्म-नीति - 157

सुहं तु चेयणे, णु दु इह तणे।।

इस तन में नहीं, चेतन में है सुख।

अध्यात्म-नीति - 158

सग-सहावदो सुहं भजिस्सदि, परभावादो दुक्खं च।।

स्व-स्वभाव से सुख मिलेगा, परभावों से दु:ख।

अध्यात्म-नीति - 159

अणादि-दोसं समारेहि, परभावादो सग-दिट्ठिं विहडिय आद-दिट्ठिं जग्गेहि।।

अनादि की भूल सुधारो, परभावों से अपनी दृष्टि हटाकर आत्मदृष्टि जगा लो।

अध्यात्म-नीति - 160

तुमं पि पुज्जं, केवचिरं पुज्जाणं पूयणं करेहिसि।।

आप भी पूज्य हैं, कब तक करोगे पूज्यों की पूजा।

अध्यात्म-नीति - 161

वेरग्गस्स रागी तु रागी तह वेरग्गस्स वेरागी हि वीदरागी।।

वैराग्य का रागी, रागी है और वैराग्य का वैरागी ही वीतरागी है।

अध्यात्म-नीति - 162

अंतोजप्पं थोवं करंतं हि अंतरंग-सुह-संकप्पं समावेहिसि।।

अंतर्जल्प को अल्प करते-करते ही कर सकोगे पूर्ण अंतरंग सुख का संकल्प।

अध्यात्म-नीति - 163

आदसाहणाए साहणं देहं अत्थि, णं साहणं सज्झं णत्थि साहणा एव साहणं।।

आत्मसाधना का साधन देह जरूर है, परन्तु साधन साध्य नहीं, साधना है।

अध्यात्म-नीति - 164

अंतोमुही-जीवणादो आदसुही-जीवणं भजेदि।।

अंर्तमुखी होने से मिलता है आत्मसुखी जीवन।

अध्यात्म-नीति - 165

करणे करणं गच्छदि, पुणो जीवो करणं पावेदि; तम्हा करणस्स समीकरणं कुणेहि, पुणो करणं ण भजेहिसि।।

करण में करण जाता है, फिर जीव करण ही पाता है; इसलिये कर करण का समीकरण, फिर नहीं पाओगे करण।

अध्यात्म-नीति - 166

सरीरं सत्तुमिव जाणेहि, णवरि मित्तं तु सदा तुज्झ हिदं करेदि।।

शरीर को शत्रु के तुल्य ही समझो, क्योंकि मित्र तो हमेशा आपका हित ही करता है।

अध्यात्म-नीति - 167

अण्णाणीहिं तुमं तुज्झ अण्णाणत्तं भावेसि।।

आप ही अपनी अज्ञानता प्रदर्शित करते हो, अज्ञानी के चक्कर में पड़कर।

अध्यात्म-नीति - 168

वत्थविग-मित्त-गवेसणत्थं मा कुत्तचिद गच्छेहि, जो गवेसेदि तम्हि अहिरमेहि।।

वास्तविक मित्र की खोज करने कहीं मत जाओ, जो खोजने जा रहा है उसी में खो जाओ।

अध्यात्म-नीति - 169

परपरिचयं वड्ढित्तु हि तुए सगपरिचयादो सगं विगिदं।।

पर परिचय बढ़ाकर ही तो कर दिया आपने स्व-परिचय से स्वयं को दूर।

अध्यात्म-नीति - 170

धणत्थं तुमं तुज्झ सव्वस्सं भामीअ।।

घुमा दिया अपना सर्वस्व स्व के लिये अर्थात् धन के लिये।

अध्यात्म-नीति - 171

जस्स भम्हो णिच्छिदो, बहु-पयासेण वि तं ण रक्खेहिसि।।

लाखों कोशिशें कर लेना, लेकिन उसे बचा नहीं सकोगे जिसकी राख ही होना है।

अध्यात्म-नीति - 172

सगेण सह णिवसणादो हि सगीय-अहिणाणं होदि।।

अपनी पहचान अपने साथ रहने से ही होती है।

अध्यात्म-नीति - 173

कसणेण सुवण्ण-अहिणाणं, आदम्हि णिवसणेण णिय-पहु-अहिणाणं होदि।।

कसने से स्वर्ण की पहचान होती है, तो आत्मा में बसने से निज भगवान की पहचान होती है।

अध्यात्म-नीति - 174

सयलवियप्प-हणणं इच्छेसि, दु अप्पा! केवलं आदमणणं कुण।।

करना हो संपूर्ण विकल्पों का हनन तो करो आत्मन्! केवल आत्ममनन।

अध्यात्म-नीति - 175

परमप्प-हवणत्थं परमप्प-रागं पि मुंचेज्जा।।

परमात्मा का राग भी छोड़ना होगा, परमात्मा बनने के लिये।

अध्यात्म-नीति - 176

मुत्ति-लच्छि-लद्धी सग-णाणेण होहिदि, ण दु संबंधि-णाणेण।।

अपनों को नहीं अपने को जानने से मिलेगी मुक्ति लक्ष्मी।

अध्यात्म-नीति - 177

सगीय-वीसासं सगम्हि जणेहि, पुण सिद्धसिलं पडि गच्छेहि।।

अपना विश्वास अपने ऊपर ही जगा लो, फिर सिद्धशिला चालो।

अध्यात्म-नीति - 178

सग-सहजोगं सयमेव तुमं कुणेहि, णवरि कोवि कस्सचिदवि सहजोगं ण करेदि।।

अपनी मदद आप स्वयं ही करो, क्योंकि कोई किसी की मदद नहीं करता।

अध्यात्म-नीति - 179

णियप्पं परमप्पा णिम्मेदुं, विसरेहि परमप्पं।।

परमात्मा को भूल जाना, स्वात्मा को परमात्मा बनाने के लिये।

अध्यात्म-नीति - 180

सुतंतदा-उज्जमं कुणेहि, ण दु सच्छंददा-उज्जमं।।

स्वच्छन्द नहीं स्वतंत्र होने का उद्यम करो।

अध्यात्म-नीति - 181

परमप्पसंपदा-लाहो अप्पाणुभूदीए होहिदि, णेव भूदाणुभूदीए।।

भूतानुभूति से नहीं, आत्मानुभूति से मिलेगी परमात्मा संपदा।

अध्यात्म-नीति - 182

बंभचेरं विणा सव्ववदाणि णिरत्थगाणि।।

सर्व व्रत व्यर्थ हैं, ब्रह्मचर्य के बिना।

अध्यात्म-नीति - 183

दुब्भावो सुभावादो पुहं कारेदि।।

दुर्भाव ही कराता है, सुभाव से दूर।

अध्यात्म-नीति - 184

अबंभभावेण तुज्झ सगीयसुहं णस्सेदि।।

अब्रह्मभाव नष्ट करता है, आपका ही अपना सुख।

अध्यात्म-नीति - 185

जोग्ग-अजोग्ग-णाणं विणा महत्ता अकज्जकारगा।।

योग्य-अयोग्य के ज्ञान बिना बड़प्पन कुछ काम का नहीं।

अध्यात्म-नीति - 186

विमाणे चिट्ठेदुं माणं विगलेहि।।

विमान जी में बैठने के लिये करो विगलित मान।

अध्यात्म-नीति - 187

असण-वसण-चागे सदि वासणा-चागो णत्थि दु चागी चागी णत्थि।।

अशन, वसन सब त्यागा, लेकिन वासना न त्यागी तो त्यागी नहीं त्यागी।

अध्यात्म-नीति - 188

जम्हि तुज्झ मज्झ सग-अत्थं णत्थि, एरिसं सत्थी-लोगं मुंचेहि।।

छोड़ो इस स्वार्थी दुनिया को, जिसमें तेरा मेरा स्व-अर्थ है ही नहीं।

अध्यात्म-नीति - 189

पुरा तुमं संबंधीणं आसी, अदु सगीयो होहि।।

पहले अपनों के थे अब अपने हो जाओ।

अध्यात्म-नीति - 190

वयं संबंधीणं कहणं असुणित्ता सगीय-कहणं सुणेमो दु णियप्पं पहुप्पेमु।।

अपन अपनों की बात न सुनकर, अपनी बात सुनें तो अपने तक पहुँच सकते हैं।

अध्यात्म-नीति - 191

सग-अत्थ-लाहत्थं कुण मोक्ख-पुरिसत्थं।।

मोक्ष पुरुषार्थ करें, पाने को स्व-अर्थ।

अध्यात्म-नीति - 192

सगं जिणित्ता णवीण-इदिहासं रएहि, णेव अवरा जिणित्ता।।

दूसरों को नहीं अपने आपको जीतकर रचो नया इतिहास।

अध्यात्म-नीति - 193

तुज्झ तुडिं तुमं हि णित्थारेसि।।

अपनी कमी आप ही दूर कर सकते हैं।

अध्यात्म-नीति - 194

अवर-तुडि-दंसणं हि तुज्झ विउलअम-तुडी।।

पर की कमियाँ देखना ही आपकी सबसे बड़ी कमी है।

अध्यात्म-नीति - 195

तुज्झ सगीया तुवं ण मुंचेहिंति, जे मुंचेहिंति ते सगीया ण होहिंति।।

आपके अपने आपको छोड़ेंगे नहीं, जो छोड़ेंगे वो अपने होंगे नहीं।

अध्यात्म-नीति - 196

सग-देहं पि भिण्णं जाणेहि, णवरि तं कदावि सगीयं ण हवीअ।।

अपनी देह को भी पराया जानो, क्योंकि वह कभी भी अपनी हुई ही नहीं।

अध्यात्म-नीति - 197

खणमेत्तस्स असंजमो पडिक्खणं रोवेहिदि।।

पल भर का असंयम पल-पल रुलायेगा।

अध्यात्म-नीति - 198

हे हंसप्पा! जग्गेहि हंस-दिट्ठिं।।

हे हंसात्मन्! हंस दृष्टि जगाओ।

अध्यात्म-नीति - 199

संसार-विजयत्थं संजमं पडि धावेहि।।

संसार को जीतने के लिये दौड़ो संयम की ओर।

अध्यात्म-नीति - 200

पदंसणे आद-दंसण-कप्पणा संसार-दंसणं ति।।

प्रदर्शन में आत्म-दर्शन की कल्पना संसार-दर्शन ही है।

अध्यात्म-नीति - 201

चेदणेण मेलंतं जीवं हि पुणो देहं ण लहेदि।।

चेतन से मिलने वाला ही नहीं पाता पुनः तन पिंजरा।

अध्यात्म-नीति - 202

असंजमिदं जीवणं मरण-सरिसं, संजमिदं जीवणं अमिद-सरिसं मण्णेहि।।

समझो असंयमित जीवन मरण तुल्य है और संयमित जीवन अमृत तुल्य है; समझो।

अध्यात्म-नीति - 203

दव्वसंजम-पुण्णदाए भावसंजमं धारेहि।।

द्रव्यसंयम की पूर्णता के लिये, धारो भावसंयम।

अध्यात्म-नीति - 204

आदसत्ति-जागरणत्थं विसयासत्ति-अभावं कुण।।

आत्मशक्ति का जागरण करने के लिये विषयासक्ति का अभाव करो।

अध्यात्म-नीति - 205

अब्भंतर-पहु-दंसणेणं हि सच्चत्थ-पहू होहिदि, णेव बहिरंग-पहु-दंसणेणं।।

बाहर नहीं अंदर विराजे भगवान को निहारकर ही बनोगे सच्चे भगवान।

अध्यात्म-नीति - 206

अप्पिग-गुण-संपदा-लाहो, सिरि-इत्थि-विमोयणादो होहिदि।।

स्त्री हो या श्री दोनों को छोड़ने से ही मिलेगी, आत्मिक-गुणों की संपदा।

अध्यात्म-नीति - 207

पसत्थ-चिंतणेण सग-पर-आदा सत्थो सच्छो य होदि।।

प्रशस्त-चिंतन से स्व-पर की आत्मा स्वस्थ और स्वच्छ होती है।

अध्यात्म-नीति - 208

सगीय-असत्तिं मुणिय तं फेडेहि तहा सयल-वीसे रज्जं कुणेहि।।

अपनी कमजोरी को पहचान कर उसे दूर करो और सारे विश्व पर राज करो।

अध्यात्म-नीति - 209

साहगो साहणाए रमेदु, दु संसारागमस्स सयल-साहणाइं णस्संते।।

साधक साधना में मन लगा ले, तो संसार में आने के संपूर्ण साधन समाप्त हो जायेंगे।

अध्यात्म-नीति - 210

जदा तुमं संजमं पडि अहिमुहेसि, तदा जीवणे अप्पत्थदा आगमेसि।।

आत्मस्थता जीवन में तब आयेगी, जब आप संयम की ओर अभिमुख होंगे।

अध्यात्म-नीति - 211

तुज्झ चिंतणं मणणं मंथणं च चिरंतण-हवणत्थं होदव्वं।।

आपका चिंतन, मनन, मंथन चिरंतन बनने के लिये हो।

अध्यात्म-नीति - 212

संतवाणी असंतभावा पसमेदि।।

अशांत-भावों को शांत कर देती है, संतों की वाणी।

अध्यात्म-नीति - 213

जोगी भोगं मुंचित्ता जोगं धरेदि तहा सगीय-उवओगिं लहेदि।।

भोग छोड़कर योग लगाता है योगी और पाता है अपना उपयोगी।

अध्यात्म-नीति - 214

जो तुमादो कदावि ण होदि पुहं, तस्स मित्तस्स सहजोगं देहि।।

उस साथी का साथ दो, जो आपसे कभी भी पृथक् नहीं होता हो।

अध्यात्म-नीति - 215

णियोवओगे लीणदाए मेत्तं जोगिस्स जोगो।।

योगी का योग केवल निज-उपयोग में जाने के लिये।

अध्यात्म-नीति - 216

संजोग-विओगं विरमेदुं जोगी जोगं करेदि।।

योगी योग करता है, संयोग-वियोग को दूर करने के लिये।

अध्यात्म-नीति - 217

पारलोगिगदा-उवलद्धीए लोगिगजणाणं संसग्ग-विसज्जणं आवस्सगेणं सह अणिवारियं।।

पारलौकिकता की उपलब्धि के लिये लौकिकजनों के संसर्ग का विसर्जन आवश्यक ही नहीं अनिवार्य है।

अध्यात्म-नीति - 218

देहरागं मुंचेहि तुमए मंगलं किदं तहा णामरागं मुंचेहिसि दु बहु-मंगलं होहिदि।।

देह का राग छोड़ा तो अच्छा किया और नाम का राग छोड़ोगे तो बहुत अच्छा होगा।

अध्यात्म-नीति - 219

हिदमिदपियवयणं भास, इदं सद्देहिं सह आयरणम्हि वि धारेहि।।

हित, मित और प्रिय बोलो यह शब्दों में ही नहीं, आचरण में भी लाओ।

अध्यात्म-नीति - 220

लाहेच्छा दु कल्लाण-कारगाणं पहे गमेहि।।

लाभ की चाह है, तो भला करने वालों की राह पर चलो।

अध्यात्म-नीति - 221

अहिंसा-धम्मेण सह जीवेहि, तस्स रागे मा जीवेहि।।

अहिंसा धर्म के साथ जीओ, उसके राग में मत जीओ।

अध्यात्म-नीति - 222

अहिंसा-धम्म-रागे हिंसं मा कुणेहि, णवरि रागो वि हिंसा।।

अहिंसा-धर्म के राग में हिंसा मत कर बैठना, क्योंकि राग भी हिंसा है।

अध्यात्म-नीति - 223

असंजमादो संसारो अणंतो तहा संजमादो संसारंतो एव होहिदि।।

संसार अनंत असंयम से और संसार अंत संयम से ही होगा।

अध्यात्म-नीति - 224

तुमं णवि असमीचीणं कुण तहा णेय असमीचीणं गेज्झ।।

न आप गलत करें और न हि गलत स्वीकार करें।

अध्यात्म-नीति - 225

सव्वे तुज्झ सगीय-करणस्स उज्जमं करिस्संति, णं तुमं सगं सगीयकरणस्स उज्जमं कुणेहि।।

सभी अपना बनाने की कोशिश करेंगे, लेकिन आप अपने आपको अपना बनाने की कोशिश करना।

अध्यात्म-नीति - 226

संबंधीणं सयल-वीसो जीवेदि, तुमं सगत्थं जीवेहि।।

अपनों के लिये सारी दुनिया जीती है, आप अपने लिये जीयें।

अध्यात्म-नीति - 227

तुज्झ सगीया सत्थ-पुण्णत्तं जावं हि सगीया होंति।।

आपके अपने स्वार्थपूर्ण होने तक ही अपने हैं।

अध्यात्म-नीति - 228

संबंधीहिं तुज्झ चिंतं किदं सगत्थं, तुमं सगत्थं सगीय-चिंतं कुण।।

अपनों ने आपकी चिंता की अपने लिये, आप अपनी चिंता करें अपने लिये।

अध्यात्म-नीति - 229

अज्जपज्जंतं सगसत्ति-उवओगं अवरं पडि गमणत्थं किदं, अदु सगं पडि गमणत्थं कुण।।

आज तक दूसरे तक जाने के लिये किया है अपनी शक्ति का उपयोग, अब अपने तक जाने के लिये करो।

अध्यात्म-नीति - 230

जदा तुमं सगीयो हवेसि, तदेव संबंधीदो पुहुत्तं वरं होदि।।

अपनों से दूरियाँ तभी अच्छी लगती हैं, जब आप अपने होते हैं।

अध्यात्म-नीति - 231

संबंधिणो समया गमणदो थोवसमयाणंदो जायदे तहा सगं समया गमणदो पत्तेगसमयाणंदो त्ति।।

अपनों के पास जाने से कुछ समय का आनंद आता है और अपने पास जाने से हर समय का।

अध्यात्म-नीति - 232

तुमं तुज्झ मुल्लं जाणेहि, तदेव तुज्झ मुल्लं होहिसि।।

आप अपनी कीमत समझें, तभी आपकी कीमत होगी।

अध्यात्म-नीति - 233

संबंधीहिं वंचणं दच्छिदं तु पुणो वंचित्ता सगवंचणं मा देहि।।

अपनों ने धोखा दिया हो, तो पुनः धोखा खाकर अपने को धोखा मत देना।

अध्यात्म-नीति - 234

ममत्तं पत्तेगजीवो दरिसेदि, जदा कज्जपुण्णदा होदि तदा सगीयो वि अवसप्पेदि।।

अपनापन हर कोई जताता है, जब काम निकल जाता है तो अपना भी दूर हो जाता है।

अध्यात्म-नीति - 235

सगं पडि सगदिट्ठिं कुणेहि।।

अपनी ओर अपनी दृष्टि ले जाओ।

अध्यात्म-नीति - 236

संबंधीहिं मेलणे सदि विओग-दुक्खं होहिदि तहा सगेण मेलणे सदि दुक्खाणमंतं च।।

अपनों से मिले तो बिछड़ने का दुःख होगा और अपने से मिले तो दुःखों का अंत होगा।

अध्यात्म-नीति - 237

सगं समया पत्तेगजीवो ण गच्छेदि, जो गच्छेदि सो सगीयो एव होदि।।

अपने पास हर कोई नहीं जाता, जो जाता है वह अपना ही हो जाता है।

अध्यात्म-नीति - 238

गमणागमणं तु पउरं किदं, अदु तत्थ गच्छेहि जत्तो भवे पुणरागमणं ण होदु।।

आना-जाना तो बहुत किया है, अब जाओ वहाँ जहाँ से जहां में वापस न आना पड़े।

अध्यात्म-नीति - 239

जदा तुमं सगीय-दिट्ठीए समीचीणो होहिसि, तदेव तुमं समीचीणो होहिसि।।

आप सही तभी होंगे, जब आप अपनी ही नज़र में सही होंगे।

अध्यात्म-नीति - 240

सगीय-सदोसवयणाइं तुवं असमीचीणाइं पडिभाहिसि दु तुमं समीचीणो होहिसि।।

अपनी ही बुरी बातें आपको बुरी लग जायें तो आप अच्छे न हो जायें।

अध्यात्म-नीति - 241

सगीयदुहं भासिय संबंधिणो मा कुण दुही, णवरि सव्वे सग-सग-दुहेहिं दुहिदा होंति।।

अपना दु:ख बताकर अपनों को दु:खी न करें, क्योंकि सभी अपने अपने दु:खों से दु:खी हैं।

अध्यात्म-नीति - 242

सगीय-तुडिं ऊसरेहि, तदेव भवभव-छदं णस्सेहिसि।।

खोट अपनी निकालो, तभी तो मिटेगी भव-भव की चोट।

अध्यात्म-नीति - 243

तुज्झ जीवणं तुव जादेसि, ण दु संबंधीणं।।

जीवन आपका अपने लिये मिला है, अपनों के लिये नहीं।

अध्यात्म-नीति - 244

संबंधिणो सग-सत्थं पस्संति, तुमं पि सगसत्थं पस्सेहि तहा सिद्धसिला-दारं उग्घाडेहि।।

अपनों ने अपना ही देखा है, आप भी अपना देखो और सिद्ध शिला का पट खोलो।

अध्यात्म-नीति - 245

तुमं संबंधीणं मज्झे ममत्त-बीयं ववेसि, तम्हा तुमं संबंधीणं मज्झे विमोहेसि ण दु सग-मज्झे।।

अपनों के बीच आपने अपनेपन के बीज बोये हैं, इसलिये आप अपने बीच नहीं अपनों के बीच में खोये हैं।

अध्यात्म-नीति - 246

संबंधी सगीयो णत्थि, सगे हि सगस्स होदि।।

अपना, अपना नहीं होता; अपन ही अपने होते हैं।

अध्यात्म-नीति - 247

संबंधीहिं जुजमाणा पत्तेगो अत्थि, किण्णु सगत्तो जुजमाणा विरला अत्थि।।

अपनों से जुड़ने वाला हर कोई है, पर अपने से जुड़ने वाला कोई-कोई है।

अध्यात्म-नीति - 248

सगस्स सगम्हि वीसासो सिद्धा समया पहुप्पेहिदि।।

अपना, अपने पर विश्वास पहुँचायेगा सिद्धों के पास।

अध्यात्म-नीति - 249

जदा सग-देहे ममत्तं णत्थि, पुण परेसुं ममत्तं किमु भावेसि; सव्वे भिण्णा हि जाणेहि।।

जब अपनी देह में अपनापन नहीं है, फिर परायों में अपनापन क्यों जताते हो; जानो सब पराये हैं।

अध्यात्म-नीति - 250

परा सग-करणस्स पयासं मा कुण, णवरि संबंधी वि सगीयो णत्थि तहा तुमं पि संबंधीणं सगीयो णत्थि।।

परायों को अपना बनाने की कोशिशें मत करो, क्योंकि अपना भी अपना नहीं है और अपन भी अपनों के अपने नहीं हैं।

अध्यात्म-नीति - 251

परेसु वीसासं करेसि, तम्हा परेहिं सह वसेसि; अदु सगम्हि कुण वीसासं संसार-णिवासं हरेहि।।

परायों पर विश्वास करते हो, इसलिये परायों के साथ रहते हो; अब करो अपने पर विश्वास, हरो संसार निवास।

अध्यात्म-नीति - 252

सगसुह-लाहत्थं, सगम्हि कुण वीसासं ण दु अवरम्हि।।

अपना सुख पाने के लिये, किसी पर नहीं अपने पर ही विश्वास करो।

अध्यात्म-नीति - 253

जदा तुमं सगेण ममत्तं दरिसेहिसि, तदा ममत्त-कारगा वि परत्तं होस्संति।।

जब आप दिखायेंगे अपने से अपनत्व, तब हो जायेंगे अपनत्व करने वाले भी परत्व।

अध्यात्म-नीति - 254

सगीय-पसण्णदाए सगेण मेलणं आवस्सगं, ण दु परेण।।

अपनी खुशी के लिये पर से नहीं, अपने से मिलना बेहद जरूरी है।

अध्यात्म-नीति - 255

सगीय-संगे संबंधिणो वि ण गच्छेंति, पुण संबंधीहिं किं राग-करणं।।

साथ अपने, अपने भी नहीं जाते, फिर अपनों से क्या राग करना।

अध्यात्म-नीति - 256

अज्जपज्जंतं संबंधीणं संसारे जीवेसि, अदु सग-संसारे जीवेहि।।

अपनों की दुनिया में जीये हो आज तक, अब अपनी दुनिया में जीओ।

अध्यात्म-नीति - 257

जो तुए सह सदा णिवसेदि, तस्स जीवणं आरंभेहि।।

उसके लिये जीना प्रारंभ करो, जो आपके साथ सदा ही रहता है।

अध्यात्म-नीति - 258

संबंधीदो संबंधं वड्ढिदूणं तुमं बंधमेव लहेसि, पुणो सो हि सगत्तो संबंधं वड्ढिदूणं सग-बंधं समप्पेज्जा।।

अपनों से संबंध बढ़ाकर, आपने बंध ही पाया है, फिर उसी ने अपने से संबंध बढ़ाकर, अपना बंध मिटाया है।

अध्यात्म-नीति - 259

तुए सदा संबंधीहिं मेलण-पयासं किदं, एगहुत्तं कुण पयासं सग-मेलणस्स पुणो कदावि संबंधी-मेलणं ण करिज्जेहिसि।।

कोशिशें हमेशा करते हो अपनों से मिलने की, बस एक बार कोशिश कर लो अपने से मिलने की, फिर कभी अपनों से मिलना नहीं पड़ेगा।

अध्यात्म-नीति - 260

नीरज-हवणत्थं धारेहि धिज्जं।।

धर धीरज, नीरज बनने के लिये।

अध्यात्म-नीति - 261

जे वि सगीया दिस्संते, सव्वे गच्छंते; तम्हा सगेण सह वसेहि।।

जो भी अपने नज़र आते हैं सब चले जाते हैं, इसलिये अपने ही साथ रहो।

अध्यात्म-नीति - 262

संबंधीहिं सह बहुकालं वसीअ, अदु सगेण सह वसेहि।।

रह लिया बहुत अपनों के साथ, अब अपने ही साथ रहो।

अध्यात्म-नीति - 263

जीवणे उवट्ठिदाइं सुहदुह-दिणाइं सगमेव भुंजेज्ज, ण दु अवरं।।

जीवन के चाहे सुख के दिन हो या फिर दु:ख के दिन, सब अपने ही भोगते हैं।

अध्यात्म-नीति - 264

संबंधीहिं सह वसेहि, किण्णु परगीया मण्णित्ता ण दु सगीया मण्णित्ता, दुहं ण होहिसि।।

रहना अपनों के साथ अपना मानकर नहीं पराया मानकर तो दु:ख नहीं होगा।

अध्यात्म-नीति - 265

संबंधीहिं सह सव्वस्स सग-सग-संबंधो त्थि, तुमं सगीय-संबंधं सगेण सह कुणेहि तहा हुवहि बंधमुत्तो।।

अपनों के साथ सबका अपना अपना संबंध है, आप अपना संबंध अपने साथ बनाये और बंध मुक्त हो जाये।

अध्यात्म-नीति - 266

तुमं संबंधी य सगेण सगेण सह वसेज्जा, दु संबंधीहिं कोवि दुही ण होहिसि।।

आप और अपने, अपने-अपने साथ रहें, तो कोई अपनों के कारण दु:खी नहीं होगा।

अध्यात्म-नीति - 267

तदा तुमं संबंधीहिं सह तहा संबंधी तुए सह इच्छाए सदि वि ण वसेज्जा, जदा तुमं सगेण सह तहा संबंधी संबंधिणा सह वसेज्जा।।

तब चाहकर भी आप अपनों के साथ और अपने आपके साथ नहीं रह सकते, जब आप अपने और अपने अपने साथ रहने लगेंगे।

अध्यात्म-नीति - 268

संगे णिवसण-पदिण्णं सव्वे कुणंति, किण्णु संगे कोवि ण गच्छेदि।।

साथ निभाने का वादा सभी करते हैं, पर साथ कोई नहीं जाता।

अध्यात्म-नीति - 269

जदा तुमं सगम्हि वसेहिसि, तदेव संबंधीणं चित्ते तुज्झ ठाणं होहिसि।।

अपनों के भीतर आपकी जगह तभी बनेगी, जब आप अपने भीतर रहोगे।

अध्यात्म-नीति - 270

सव्वे तुए रागं कुणंति, किण्णु मरणे सदि कोवि ण पुच्छेदि।।

राग सब करते हैं आपसे, लेकिन राख हो जाने पर कोई नहीं पूछता।

अध्यात्म-नीति - 271

अणेगहुत्तं तेहिं संगलेसि, जो सगीयो णत्थि, एगहुत्तं तेण संगलेसि जो सगीयो त्थि।।

कई बार मिले हो उनसे, जो अपने नहीं हैं, एक बार मिलो उससे, जो अपना है।

अध्यात्म-नीति - 272

संबंधिणो सगीय-कहणस्स अब्भासो जादो, ता परं मण्णेहि दु सगं सगस्स मण्णेहिसि।।

आदत हो गई है अपनों को अपना कहने की, उनको पराया मानने लग जाओ, तो अपने को अपना मानने लग जाओगे।

अध्यात्म-नीति - 273

संबंधीणं संसारो संबंधीणमेव अत्थि तहा सग-संसारो सगस्स हि अत्थि।।

अपनों की दुनिया अपनों की ही है और अपनी दुनिया अपनी ही है।

अध्यात्म-नीति - 274

संबंधीणं रागे तुमं तुवमेव विसरेसि।।

अपनों के राग में अपन अपने को ही भूल गये।

अध्यात्म-नीति - 275

संबंधी वि सगीयो णत्थि, किण्णु सो हि गेण्हेहिदि जो कुणेहिदि सगीय-समीचीण-णाणं; इदं जीवणस्स जेट्ठुअमं कडुग-सच्चं।।

जीवन का सबसे बड़ा कटु सत्य कि— अपने भी अपने नहीं लेकिन वही स्वीकार करेगा जो जानेगा अपने को सही।

अध्यात्म-नीति - 276

सगीय-परगीय-णाणस्स उज्जोगं सव्वे करेंति, किण्णु सग-णाणस्स उज्जोगं कोवि विरलो हि करेदि।।

अपने और परायों को जानने का प्रयास सभी करते हैं, लेकिन अपने को जानने का प्रयास कोई विरला ही करता है।

अध्यात्म-नीति - 277

सगीय-विजयं तदा मण्णेहि, जदा तुमं सगं जिणेहि।।

अपनी जीत तब मानना, जब आप अपने को जीतो।

अध्यात्म-नीति - 278

परजीवा अणेगहुत्तं जिणेसि, एगहुत्तं सगे वसित्ता सगं हि जिणेहि।।

परायों को तो बहुत बार जीता है, एक बार अपने में रहकर अपने को जीतो।

अध्यात्म-नीति - 279

संबंधीहिं दुहं दिसिदं, इदं विसरेहि तहा सुही होहिसि।।

अपनों ने दु:ख दिया है, ये भूल जाओ और सुखी हो जाओगे।

अध्यात्म-नीति - 280

तुमं सगीयस्स हुवहि, ण दु संबंधीणं।।

आप अपनों के नहीं, अपने बनें।

अध्यात्म-नीति - 281

अज्ज सगीयो परगीयो होदि, कल्लं तुमं पि परगीयो होहिसि।।

आज अपना पराया हो गया है, कल आप भी पराये हो जाओगे।

अध्यात्म-नीति - 282

संबंधीहिं सह वसेहि, किण्णु णूणं सगं सया वसेहि।।

अपनों के साथ रहना, पर रहना अपने ही पास।

अध्यात्म-नीति - 283

संबंधीहिं ममत्तमेव तुवं तुवं समया ण गच्छेज्जा, मुंचेहि संबंधीदो ममत्तं।।

अपनों से अपनापन ही आपको अपने पास नहीं जाने देता, छोड़ो अपनों से अपनापन।

अध्यात्म-नीति - 284

तुमं सगेण दुही होसि तहा दोसं संबंधिणो देसि।।

अपन अपने कारण दु:खी होते हैं और दोष अपनों को देते हैं।

अध्यात्म-नीति - 285

जा सगीया मण्णेसि ता सगचित्तादो विसज्जेहि; इमं सगीय-अणादि-दोसं उच्चिण।।

अपनी अनादि की भूल सुधार कर लो, जिन्हें मानते हो अपना, उन्हें अपने मन से विदा कर दो।

अध्यात्म-नीति - 286

संबंधीणं आणंदो सगीयो णत्थि, सगीय-आणंदो सगम्हि एवत्थि।।

अपनों का आनंद अपना नहीं, अपना आनंद अपने में ही है।

अध्यात्म-नीति - 287

तुमं सगेण मिल्लेहि दु संबंधीदो पुहं होंति, किण्णु पुहुत्ते सदि सगीय-आणंदो भिण्णो हि आगमेदि।।

अपन अपने से मिलें तो अपने अलग जरूर हो जाते हैं, परन्तु अलग होने पर अपना आनंद अलग ही आता है।

अध्यात्म-नीति - 288

संबंधीदो पुहुत्तस्स विउल-लाहो, अज्जपज्जंतं जत्तो पुहं वसेज्जा तं समया पहुप्पेसि।।

अपनों से दूर जाने का बड़ा फायदा है, जिससे आज तक दूर रहे उसके पास पहुँच जाते हैं।

अध्यात्म-नीति - 289

तुमं संबंधीणं दोसा पस्सेसि, तम्हा तुमं सग-दोसा ण ऊसरेसि।।

अपन अपनों की कमियाँ देखते रहते हैं, इसलिये आप अपनी कमियों को दूर नहीं कर पाते हैं।

अध्यात्म-नीति - 290

सग-दोसा दंसणेण तुमं होदि उत्तमो, ण दु अवर-दोसा दंसणेण।।

दूसरों की कमी देखने से नहीं, अपनी कमियाँ देखने से आप अच्छे बन पाते हैं।

अध्यात्म-नीति - 291

अज्ज जं लहेदि, कल्लं तं ण होहिदि; णवरि किंचणं पि सासयं णत्थि।।

आज जो मिला है कल वह नहीं रहेगा, क्योंकि कुछ भी शाश्वत नहीं है।

अध्यात्म-नीति - 292

अवर-बोहण-अवेक्खाए सग-बोहण-पयासं कुण, तुमं होहिसि बुद्धिमंतो।।

दूसरों को समझाने की अपेक्षा आप अपने आपको समझाने का प्रयास करेंगे, तो आप समझदार हो जायेंगे।

अध्यात्म-नीति - 293

तुमं जस्स, रक्खणं इच्छेसि तस्स विणासो होहिदि, सव्वं विणस्सरं तम्हा अविणस्से कुण दिट्ठिं।।

जिसे बचाना चाहते हो तो वह बचेगा नहीं, सब नश्वर है, इसलिये अविनश्वर पर दृष्टि ले जाओ।

अध्यात्म-नीति - 294

जदा संबंधिणो तुज्झ किंचणं कुणंति दु जाणेहि ते सगत्थं हि कुणंति णवरि सत्थं विणा कोवि कस्सचिदवि किंचणं पि ण करेदि।।

जब अपने आपके लिये कुछ करें तो समझना वह अपने लिये कर रहे हैं क्योंकि बिना स्वार्थ के कोई किसी के लिये कुछ भी नहीं करता।

अध्यात्म-नीति - 295

तुमं सगत्थं किंचण करेदुं भासेसि दु संबंधिणो तेसिं किंचण करेदुं भासेंति, तम्हा जाणेहि संसारो सत्थी होदि।।

आप अपने लिये कुछ करने के लिये कहते हो तो अपने, अपने लिये कुछ करने के लिये कहने लगते हैं इसलिये समझना दुनिया स्वार्थी है।

अध्यात्म-नीति - 296

संबंधीणं किंचण कज्जादो, ते तुज्झ होहिंति आवस्सं णत्थि, किण्णु सगत्थं किंचण कज्जादो तुमं तुज्झ अवस्सं होहिसि।।

अपनों के लिये कुछ करने से, जरूरी नहीं अपने-अपने होंगे, लेकिन अपने लिये कुछ करने से आप जरूर अपने होंगे।

अध्यात्म-नीति - 297

जदि तुमं संबंधी-कज्जं संबंधी तुज्झ कज्जं च पस्सेज्जा दु ववहारो गदिमाणो तहा सव्वे सग-सग-कज्जं पस्सेज्जा दु ववहारो अवक्कमेदि।।

अपन अपनों का कार्य देखें और अपने आपका कार्य देखें तो व्यवहार चलता है और सब अपना-अपना कार्य देखें तो व्यवहार चलते बनता है।

अध्यात्म-नीति - 298

तुमं तुममेव अत्थि, तुमं परगीयो णत्थि, परगीएसुं तुमं णत्थि तहा ममत्ते वि तुमं णत्थि।।

अपन-अपन ही हैं अपन अपने नहीं, अपनों में अपन नहीं और अपनेपन में भी अपन नहीं।

अध्यात्म-नीति - 299

तुमं तुज्झ होज्जा तदेव उत्तमो समीचीणो त्थि।।

अपन अपने हैं तभी अच्छे और सच्चे हैं।

अध्यात्म-नीति - 300

संबंधीसुं ममत्तं दिस्समाणो सगीयो ण होदि, तम्हा सगम्हि ममत्तं दिस्सेहि।।

अपनों में अपनापन जताने वाला अपना नहीं हो पाता, इसलिये जताओ अपने में अपनापन।

अध्यात्म-नीति - 301

सगत्तो तुवं विओजमाणो तुज्झ संबंधीणं ममत्तं अत्थि, णो कोवि अण्णो।।

अपने से आपको अलग करने वाला कोई और नहीं, आपका अपनों के लिये अपनापन है।

अध्यात्म-नीति - 302

जदा तुमं सगीय-संसारे वसेहिसि ण दु संबंधि-संसारे, तदेव तुवं संसारो भिण्णो इदरो लोएहिसि।।

दुनिया पराई तब दिखेगी, जब अपनों की नहीं, अपनी दुनिया में रहोगे।

अध्यात्म-नीति - 303

तुमं सगं समया गच्छेहि, पुण ममत्तं पदरिसणस्स आवस्सगत्तं ण होहिदि।।

अपनापन दिखाने की जरूरत नहीं पड़ेगी बस आप अपने ही पास चले जाओ।

अध्यात्म-नीति - 304

संबंधिणा अज्जपज्जंतं रागवड्ढणं किदं, तम्हा अज्जपज्जंतं संबंधिणो समया तुज्झ जम्म-मरणं जादं।।

अपनों ने आजतक राग का वर्धन किया है, इसलिये तो आजतक अपनों के बीच अपना जन्म-मरण हुआ है।

अध्यात्म-नीति - 305

जदा तुमं संसारे सगम्हि जीवेहिसि, तदा तुमं संसारे मरित्तु वि जीवेहिसि।।

मरकर भी जीते रहोगे दुनिया में, जब जीओगे अपने में रहकर दुनिया में।

अध्यात्म-नीति - 306

संबंधीहिं ममत्तं दंसणस्स तुडिं पुव्वमिव अदु मा कुण, णवरि इमेण दोसेण संसार-णिवसणं होदि।।

हर बार की तरह इस बार नहीं करना गलती, अपनों से अपनापन जताने की, क्योंकि यही गलती है संसार में रहने की।

अध्यात्म-नीति - 307

सगीय-अहिणाणं सग-देहेण णत्थि, तं तु सगीय-सरल-सहावेण होहिदि।।

अपनी पहचान अपने शरीर से नहीं अपने सरल स्वभाव से बनायें।

अध्यात्म-नीति - 308

जदि तुमं सगं ण बोहेहि, दु तुमं अण्णाणी।।

नासमझ हैं आप, अगर आप अपने को नहीं समझे।

अध्यात्म-नीति - 309

संबंधीणं मुल्लं बहुवारं किदं, अदु सग-मुल्लं सिक्खेहि, जेण तुमं संबंधीणं मज्झे ण लोएज्जा।।

अपनों की कीमत बहुत की है अब अपनी कीमत करना सीखो, जिससे अपनों के बीच नहीं दीखोगे।

अध्यात्म-नीति - 310

सगसड्ढा-विगासं सगे हि सगत्थं कुणेहि।।

अपने लिये करना, अपनी श्रद्धा का अपने में ही विकास।

अध्यात्म-नीति - 311

सगीय-वयणे परगीया रूसंति णेव सगीया, जे रूसंति ते सगीया होदूणं पि परगीया हि होंति।।

अपनी बात पर अपने नहीं पराये रूठते हैं, जो रूठते हैं वो अपने होकर भी पराये ही होते हैं।

अध्यात्म-नीति - 312

सगीयजीवणं सगत्थं भजेसि, तं संबंधीणं जीविय मा विणस्सेहि।।

अपना जीवन अपने लिये मिला है, उसे अपनों के लिये जीकर नष्ट मत करो।

अध्यात्म-नीति - 313

तुज्झ संबंधिणो तुए सह असुहं कुज्जा दु उत्तमं मण्णेहि, णवरि ते तुवं भूदत्थदाए उवदिसेज्जा-सगीया वि सगीया ण होंति।।

आपके अपने आपके साथ बुरा करें तो अच्छा ही समझना, क्योंकि उन्होंने आपको सच्चाई से अवगत तो करा दिया कि— अपने भी अपने नहीं हैं।

अध्यात्म-नीति - 314

सगसंसारे वसित्ता सगं जिणेहि, वीसो तुवं सदा सुमरेहिदि।।

अपनी दुनिया में रहकर जीत लो अपने को, दुनिया आपको हमेशा याद रखेगी।

अध्यात्म-नीति - 315

संबंधीणं मज्झे वसित्ता सगीयो हवणं अब्भुदा कला, इमं सिक्खेहि।।

अपनों के बीच रहकर अपना ही बना रहना बड़ी अद्भुत कला है, सीखो इसे।

अध्यात्म-नीति - 316

तुमं सगीयं सगकरणं आरंभेहि, किण्णु सगीयं आरंभे हि संलग्गेसि, तम्हा तुमं जम्म-मरणं चेव लहेसि।।

आप अपने को अपना बनाना प्रारंभ करो, पर अपने आपको आरंभ में ही लगा देते हो, कारण यही है आप जन्म-मरण ही पाते हो।

अध्यात्म-नीति - 317

सच्चत्थत्तं गेण्हेहि-संबंधीहिं पीदिं अपीदिं च मा कुणेहि, मज्झत्थो होदूणं सगीयजीवणं सुहमयं कुणेहि।।

सच्चाई का सामना करो अपनों से न प्रीति करो, न अप्रीति करो बस मध्यस्थ रहकर अपना जीवन सुखमय करो।

अध्यात्म-नीति - 318

जीवणंते संबंधिणो संता वि य संगे वसंति, किण्णु जदा तुमं पंथग्गहत्तो विहडित्ता जीवेसि तदेव तुज्झ अंतो संभलेज्जा।।

जीवन के अंत में अपने भी साथ रह सकते हैं और संत भी, लेकिन जब आप पंथाग्रह से दूर रहकर चलते हैं तब ही आपका अंत संभलता है।

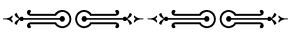

अध्यात्म-नीति - 319

तुमं तुए सह वसेसि संबंधी संबंधिणा सह वसंति तहा संगे गमेदुं भासेज्जा दु संगे कोवि कस्सचिदवि ण गच्छेदि।।

अपन अपने साथ और अपने अपने साथ रहते हैं और साथ जाने के लिये कहते हैं तो साथ कोई भी किसी के नहीं जाता है।

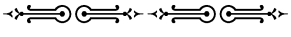

अध्यात्म-नीति - 320

जदि तुमं सगं सगे जुंजेहिसि, पुण ममत्तं विमोयणस्स आवस्सगत्तं णत्थि।।

अपनापन छोड़ने की जरूरत नहीं पड़ेगी, अगर आप अपने को अपने में जोड़ेंगे।

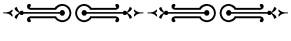

अध्यात्म-नीति - 321

सगीय-चरिचा-अच्चादो हि सगं पडि पहुच्चेहि, ण दु संबंधी-चरिचादो।।

अपनों की चर्चा से नहीं, अपनी चर्चा और अपनी अर्चा से ही पहुँचो अपने तक।

अध्यात्म-नीति - 322

सगीय-भावं परभावत्तो ऊसरेहि तहा सगम्हि इज्जेहि।।

भाव अपने परभावों से हटाओ और अपने में आ जाओ।

अध्यात्म-नीति - 323

संबंधीणं वयणेहिं तुमं सगं जावं ण पहुप्पिदं, सगीय-वयणाइं सगेणेव कुण।।

अपनों की बातों ने अपने तक नहीं पहुँचने दिया, करो अपने से ही अपनी बातें।

अध्यात्म-नीति - 324

सग-सहावे हि दिस्सदे सग-सहावो, परभावेसुं किंचिवि णत्थि।।

अपने ही स्वभाव में दिखता है अपना स्वभाव, परभावों में किंचित् भी नहीं।

अध्यात्म-नीति - 325

अणेगमज्झे वसित्ता एगं सग-सच्चप्पं विजाणेहि।।

अनेकों के बीच रहकर पहचान लो, एक अपनी नेक आत्मा को।

अध्यात्म-नीति - 325

जदि सगीय-सगीय-सहावं जाणेहिदि, दु तुमं हि सगम्हि वसेहिसि।।

अगर अपना-अपना स्वभाव जानने लगोगे, तो आप ही अपने में रहने लगोगे।

अध्यात्म-नीति - 326

तुमं सग-समयं संबंधिणो देसि दु तुमं संबंधीणं हवेसि; सग-समयं सगं देहि दु सगस्सेव होहिसि।।

आप अपना समय अपनों को देते हो तो आप अपनों के हो जाते हो, अपने को दो तो अपने ही हो जाओगे।

अध्यात्म-नीति - 327

संसारजीवा विसेसा होदूणं पि विसेसा ण होंति, इदं विसेस-वयणं।।

खास बात तो यह है कि दुनिया के लोग खास होकर भी खास नहीं है।

अध्यात्म-नीति - 328

संबंधिणो तुवं विसरेज्जा, किण्णु तुमं सगीयं मा विसरेहि।।
अपने भूल जायें आपको, परन्तु आप अपने को मत भूलना।

अध्यात्म-नीति - 329

सगादो अहिगादो कोवि सगीयो णत्थि, तेण संबंधिणो मुंचेहि।।
अपने से ज़्यादा कोई भी अपना नहीं है, इसलिये छोड़ो अपनों को।

अध्यात्म-नीति - 330

जदा तुमं सगेण संवादेसि, तदेव तुमं सगे अंतसे वा वसेसि।।
जब आप अपने से बात कर पाते हैं, तब ही आप अकेले रह पाते हैं।

अध्यात्म-नीति - 331

जदि संबंधिणो विमोयण-पसंगो आगमेज्जा दु ता विमुंचेहि, णवरि तेसिं विमोयणं विणा तुमं सगेण ण संमिलेसि।।
अगर अपनों को छोड़ने की बात सामने आये तो छोड़ देना; क्योंकि उन्हें छोड़े बिना आप अपने से नहीं मिल सकते हैं।

अध्यात्म-नीति - 332

संबंधीणं वीससणीयो हवणत्थं सग-वीससणीयो खु हवेहि।।

अपनों के विश्वसनीय बनने के लिये, अपने विश्वसनीय जरूर बनें।

अध्यात्म-नीति - 333

संबंधिणो तुवं विहडीअ, तुमं संबंधिणा विहडित्ता सगे आगच्छेहि।।

अपनों ने आपको हटाया, आप अपनों को हटाकर अपने में आ जाओ।

अध्यात्म-नीति - 334

तुज्झ रागो संबंधीहिं अत्थि, तम्हा तुज्झ सगेण रागो अज्जपज्जंतं ण होसि।।

आपका जुड़ाव अपनों से है, इसलिये अपने से जुड़ाव आजतक नहीं हुआ।

अध्यात्म-नीति - 335

सग-परिचयो संबंधीहिं अत्थि, जदि परिचयो सगेण होज्जा दु संबंधिणो वि अपरिचिदा होज्जा।।

परिचय अपना अपनों से है, अपने से हो जाये तो अपने भी अपरिचित हो जायेंगे।

अध्यात्म-नीति - 336

सग-परिचयं पदत्तस्स आवस्सगत्तं णत्थि, सगेण परिचयस्स आवस्सगत्तं, तुज्झ परिचयं वीसो कारेहिदि।।

अपना परिचय कराने की जरूरत नहीं है, अपने से परिचय करने की जरूरत है, आपका परिचय दुनिया करायेगी।

अध्यात्म-नीति - 337

पस्संतो पस्संतो बंधुजणो विणस्सेदि, पुण रागं किं कुणेसि।।

देखते ही देखते राख हो जाता है राखने वाला, फिर राग क्यों करते हो।

अध्यात्म-नीति - 338

संबंधिणो संबंध-जोयणस्स उज्जमं तु कुणीअ, किण्णु ण जोडेज्जा; णवरि सगेण हि संबंधं जोडेमि हं।।

अपनों ने रिश्ता जोड़ने का प्रयास तो किया पर जोड़ न सके; क्योंकि मैंने अपने से ही रिश्ता जोड़ लिया है।

अध्यात्म-नीति - 339

संबंधीहिं रागं किच्चा तुमं सगमेव विसरीअ, अयं तुज्झ दोसो।।

अपनी ही भूल है जो अपनों से राग करके अपन अपने को ही भूल गये।

अध्यात्म-नीति - 340

तुमं संबंधीणं वयणं सुणेसि, तम्हा दु तुमं सग-वयणं ण सुणिज्जेसि।।

अपनों की बात सुनते रहते हो, इसलिये आप अपनी बात नहीं सुन पाते हो।

अध्यात्म-नीति - 341

संबंधीणं वत्ताओ सगम्हि ण पहुप्पेंति, मा कुण संबंधीहिं वत्तं।।

अपनों की बातें अपने तक नहीं पहुँचने देतीं, मत करो अपनों से बातें।

अध्यात्म-नीति - 342

संबंधीणं सुणेहिसि दु सगत्तो पुहं होहिसि, तम्हा सगज्झुणिं सुणेहि।।

अपनी आवाज़ सुनो, अपनों की सुनोगे तो अपने से दूर हो जाओगे।

अध्यात्म-नीति - 343

संबंधिणो साहचरियं देहिंति आवस्सगं णत्थि, किण्णु जदि तुमं सगीय-साहचरियं देहिसि दु तुमं सगीय-साहचरिए हि वसेहिसि इदं आवस्सगं।।

जरूरी नहीं कि- अपने साथ देंगे, लेकिन इतना जरूर है कि आप अपना साथ देंगे तो आप अपने ही साथ रहेंगे।

अध्यात्म-नीति - 344

किं किदं संबंधीहिं मेलित्ता, संबंधीणं होदूणं वसीअ; सगेण हि ण मेलीअ।।

क्या किया अपनों से मिलकर, अपनों के ही बनकर रह गये; अपने से मिल ही नहीं पाये।

अध्यात्म-नीति - 345

सगम्हि लीणदाए हि सगीय-पसण्णदालाहो होहिदि ण दु रोदणेण, णवरि संबंधीसुं लीणदाए हि तुमं रोच्छेसि।।

रोने से नहीं, अपने में खोने से ही मिलेगी अपनी खुशी; क्योंकि अपनों में खोने के कारण ही तो आपको रोना पड़ा है।

अध्यात्म-नीति - 346

संबंधीसुं लीणदाए सगं खएहिसि, सगम्हि लीणदाए संबंधिणो य, अदु तुमं चिंतेहि किं खएज्जा?

अपनों में खोने से अपने को खो जाओगे, अपने में खोने से अपनों को; अब क्या खोना है वो आप देख लो।

अध्यात्म-नीति - 347

जो सगीयो त्थि सो संबंधीणं णत्थि, जो संबंधीणं अत्थि, सो सगीयो णत्थि।।

जो अपना है वो अपनों का नहीं, जो अपनों का है वो अपना नहीं।

अध्यात्म-नीति - 348

तुमं सगचित्ते संबंधीणं चित्तं धारेसि, तम्हा सग-चित्तं सगचित्ते ण आगमेदि।।

अपने चित्त में अपनों का चित्र बसा रखा है, इसलिये अपना चित्र अपने चित्त में नहीं आ रहा है।

अध्यात्म-नीति - 349

जदि तुमं संबंधीदो ऊसरेसि, दु सगादो ण अवगच्छेसि।।

अपन अपनों से दूर रहते, तो अपने से दूर न जाते।

अध्यात्म-नीति - 350

सग-कम्माइं सगस्स, संबंधी-कम्माइं संबंधीणं; पुणो किं संबंधी-कम्म-चिंतणं कुणेसि, सग-कम्मचिंतणं कुण।।

अपने कर्म अपने हैं अपनों के कर्म अपनों के हैं, फिर क्यों रखते हो अपनों के कर्मों का ध्यान; रखो अपने कर्मों का ध्यान।

अध्यात्म-नीति - 351

तुज्झ कम्मं संबंधिणो ण भुंजेहिंति तहा तुमं पि संबंधी-कम्मं ण भुंजेहिसि; तम्हा सग-सग-कम्म-चिंतणं कुणेहि।।

आपका कर्म अपने नहीं भोगेंगे और आप भी अपनों के कर्म नहीं भोगेंगे, इसलिये रखो अपने अपने कर्मों का ध्यान।

अध्यात्म-नीति - 352

संबंधीहिं मेलित्ता तुमं ममत्तं सिक्खेसि, अदु सगेण मेलित्ता सगेण ममत्तं सिक्खेहि।।

सीख तो लिया अपनों से मिलकर अपनापन, अब सीख लो अपने से मिलकर अपने से अपनापन।

अध्यात्म-नीति - 353

जदि तुमं संबंधिणो गेण्हेसि दु सगत्तो ऊसरेहिसि तहा जदि तुमं सगं गेण्हेसि दु संबंधीदो ऊसरेहिसि।।

अपना लिया अपनों को तो अपने से दूर हो जायेंगे अपन और अपना लिया अपने को तो अपनों से दूर हो जायेंगे अपन।

अध्यात्म-नीति - 354

संबंधीणं अट्ठा परियट्टेंति, तम्हा संबंधिणो मग्गं परियट्टेंति।।

अपनों की आस्था बदल गई है, इसलिये अपनों ने रास्ता बदल लिया है।

अध्यात्म-नीति - 355

संबंधी-मेलणं जादं, कम्म-कीडं जादं च दु संबंधी हि विहडीअ।।

अपनों का मेल हुआ, कर्मों का खेल हुआ तो अपने ही बिखर गये।

अध्यात्म-नीति - 356

संबंधिणो सगीयचिंता णत्थि तहा तुमं संबंधीणं चिंताए संतप्पेसि।।

अपनों को अपनी चिंता नहीं है और आप अपनों की चिंता में सूखे जा रहे हो।

अध्यात्म-नीति - 357

संबंधी-वत्तं संबंधीहिं करीअ संबंधिणो ममत्तं मुंचीअ, अहं जाणेज्जा, तम्हा सगीएण हं संबंधं जोडेसि।।

अपनों की बात अपनों से की अपनों ने अपनापन छोड़ दिया, मैं समझ गया; इसलिये मैंने अपने से ही नाता जोड़ लिया।

अध्यात्म-नीति - 358

सगीय-णियट्ठाणे गमणत्थं, गेण्हेहि णियं।।

अपनालो निज को, अपने निजी स्थान में जाने के लिये।

अध्यात्म-नीति - 359

सगट्ठाणे वसमाणा सिद्धट्ठाणे वसमाणा होंति।।

अपने स्थान पर रहने वाले बन जाते हैं, सिद्धों के स्थान पर रहने वाले।

अध्यात्म-नीति - 360

संबंधीणं मज्झे णिवसणे मोदो जायदे तहा सग-मज्झे णिवसणे आणंदो जायदे, एवमेव सगस्स संबंधीणं अंतरं।।

अपनों के बीच रहकर मज़ा आता है और अपने बीच रहकर आनंद, यही तो अपने और अपनों के बीच का अंतर होता है।

अध्यात्म-नीति - 361

अज्जपज्जंतं संबंधिणो सगस्स अवगमणस्स दोसं करीअ, अदु सगं सगस्स मुणिय बुद्धि-परिचयं देहि।।

अपनों को अपना समझने की आज तक भूल की है, अब अपने को अपना समझकर समझदारी का परिचय दें।

अध्यात्म-नीति - 362

संबंधिणो परगीय-करणस्स आवस्सगत्तं अत्थि, तुमं तुज्झ होहिसि।।

अपनों को पराया बनाने की जरूरत है, आप अपने हो जाओगे।

अध्यात्म-नीति - 363

सगगेहं णिम्मित्ता संबंधिणो तम्हि वसंति तहा णूणं वयं परिवार-गेहेसुं वसित्ता वि सगप्प-गेहे हि वसेमो।।

अपना घर बनाकर अपने उसमें रहते हैं और हम अपनों के घरों में रहकर भी अपने ही घर में रहते हैं।

अध्यात्म-नीति - 364

जदि संबंधी तुज्झ वीसासं तुट्टंति दु सगम्हि वीसासं आरंभेदि, णवरि सगीय-वीसासेण होदि उण्णदी, णेव संबंधीणं वीसासेण त्ति।।

अपने विश्वास तोड़ दें तो अपने पर विश्वास करना शुरू कर देना, क्योंकि अपना विश्वास ही उन्नति दिलाता है अपनों का नहीं।

अध्यात्म-नीति - 365

संबंधिणो संबंधीणं सुहं हरित्ता सगसुहं हि हरेज्जा।।

अपनों ने अपनों का सुख छीनकर, अपना ही सुख छीन लिया है।

अध्यात्म-नीति - 366

तुमं सगीयो ण होदूणं संबंधीणं होसि, तम्हा दु तुमं सगीयो ण हविज्जसि।।

अपन अपने न होकर अपनों के ही हो जाते हैं, इसलिये तो अपने अपने नहीं हो पाते हैं।

अध्यात्म-नीति - 367

संबंधिणो मल्लेदूणं तुमं सग-सुहादो ऊसरेसि तहा तुमं सगं मल्लेदूणं सग-दुहादो ऊसरेसि, पुणो सया सगीय-दुहं हि अवसप्पेज्जा।।

अपनों को अपनाकर आप अपने सुख से दूर हो जाते हो और आप अपने को अपनाकर अपने दु:खों से दूर हो जाते हो, फिर क्यों न अपना दु:ख मिटाया जाये।

अध्यात्म-नीति - 368

सगजीवणे संबंधी-रागो बंधं हि कारेहिदि, तम्हा सगेण अणुरागं कुणेहि तहा कम्म-मलं विहडेहि।।

अपनी ज़िंदगी में अपनों की बंदगी बंध ही करायेगी, इसलिये अपने से करो अपनी बंदगी और करो दूर कर्मों की गंदगी।

अध्यात्म-नीति - 369

संबंधीहिं सह णिवसणादो आवत्तीओ वड्ढंति, सगेण सह णिवसणादो आवत्तीओ हरिस्संति।।

अपनों के साथ रहकर मुश्किलें बढ़ती हैं, अपने साथ रहने से मुश्किलें घटती हैं।

अध्यात्म-नीति - 370

संबंधीणं आहवाणणे तुमं ता समया झत्ति गच्छेसि, कदाइ सगं पि सगं समया आहवेहि।।

अपनों के बुलाने पर आप उनके पास तुरंत चले जाते हो, कभी अपने को भी अपने पास बुला लिया करो।

अध्यात्म-नीति - 371

सगेण अमेलणादो हि तुमं अज्जपज्जंतं संबंधीणं मज्झे होसि।।

अपने से नहीं मिलने का ही नतीज़ा है कि आप आज तक अपनों के बीच में हो।

अध्यात्म-नीति - 372

संबंधीणं कल्लाणं बहुवारं किदं, अदु सगेण मेल्लित्ता सग-कल्लाणं कुणेहि।।

अपनों का भला तो बहुत किया है, अब अपने से मिलकर अपना भला करो।

अध्यात्म-नीति - 373

जदि कोवि भासेदि—तुवं संबंधीहिं मेलणस्स समयो णत्थि। तुमं तं भासेसि—सगेण संमिल्लेहि पुण तुमं पि भासेज्जा-संबंधीहिं मेलणस्स आवस्सगत्तं णत्थि।।

लोग कहें कि आपको अपनों से मिलने की फुरसत नहीं है तो कह देना कि मिल लो अपने से, फिर आप भी कहते मिलोगे कि—अपनों से मिलने की जरूरत नहीं है।

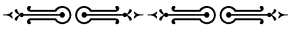

अध्यात्म-नीति - 376

सगीय-हवणत्थं संबंधीदो सग-ममत्तं मुंचेहि।।

बनने के लिये अपना, छोड़ो अपनों से अपनापन अपना।

अध्यात्म-नीति - 377

सगीय-परगीय-मेलणं सरलं, किण्णु सगप्पेण मेलणं कढिणं।।

अपनों और परायों से मिलना सरल है, पर अपने आप से मिलना कठिन है।

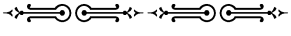

अध्यात्म-नीति - 378

कल्लं एगो सगीयो मरीअ, सो भासीअ- कोवि सगीयो णत्थि; तम्हा दु सगम्हि वसेहि।।

कल एक अपना चला गया, वह ये बता कह गया है कि–कोई भी अपना नहीं है; इसलिये अपने में रहो।

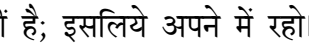

अध्यात्म-नीति - 379

तावं संबंधीणं ओट्ठेसुं तुज्झ णामो, जावं तुमं तेसिं सत्थ-पुत्तिं करिहिसि।।

अपनों के ओठों पर आपका नाम तभी तक रहेगा, जब तक उनके स्वार्थों की पूर्ति करते रहेंगे।

अध्यात्म-नीति - 380

संसारो संबंधी-गमणे रोच्छेदि ण दु परगीय-गमणे, तम्हा संबंधिणो वि परगीया मण्णेहि, जेण कदावि ण रोच्छेहिसि।।

ये दुनिया अपनों के जाने पर रोती है परायों के जाने पर नहीं, क्यों न अपनों को भी पराया माना जाये, जिससे कभी भी रोना नहीं पड़ेगा।

अध्यात्म-नीति - 381

जह सगधणं अवराणं णत्थि, अवर-धणं सगस्स णत्थि; तहेव तुज्झ संबंधी तुज्झ णत्थि, तुमं पि संबंधीणं णत्थि।।

अपना धन जैसे परायों का नहीं, परायों का धन अपना नहीं; ऐसे ही आपके अपने आपके नहीं, आप भी अपनों के नहीं।

अध्यात्म-नीति - 382

पोग्गलिग-सद्दा तुमं सगीया मण्णेसि, णं तेसुं तुज्झ सगीयो किंचणमवि णत्थि।।

पौद्गलिक शब्दों को आप अपना मानकर बैठ गये हो, जबकि उनमें आपका अपना कुछ भी नहीं।

अध्यात्म-नीति - 383

तुवं संबंधी सगीयो पडिभासि, इदं सच्चं णत्थि, तुवं तुममेव सगीयो पडिभासि, एवमेव सच्चं।।

अपना अपना लगे, पर ये सत्य नहीं; आपको आप ही अपने लगें, सत्य है यही।

अध्यात्म-नीति - 384

जं तुज्झ तुए मुणावेदि, तमेव सगणाणं वरं।।

श्रेष्ठ है वही ज्ञान अपना, जो आपकी आपसे पहचान कराये।

अध्यात्म-नीति - 385

सगत्थं कुण सव्वस्स-समप्पिदं ण दु परत्थं, पुण सव्वस्सं सग-णाणे झलेहिदि।।

अपनों के लिये नहीं अपने लिये सर्वस्व समर्पित करें, तो सर्वस्व अपने ज्ञान में झलकेगा।

अध्यात्म-नीति - 386

लोगिगदादो ऊसरेदूणं पस्सेहि जीवेहि, तदेव तुवं सगीय-भूदत्थ-आणंदं जादेहिसि।।

दुनियादारी से दूर रहकर देखो तो सही; तभी आपको अपना सही आनंद आयेगा।

अध्यात्म-नीति - 387

'सव्वे सगीया' इदं वक्कं भासणेण तुज्झ संबंधी तुज्झ होंति, 'सव्वे परगीया' इदं वक्कं भासणेण तुमं तुज्झ सगीयो होसि।।

एक वाक्य सब अपने हैं कहने से आपके अपने आपके हो जाते हैं, एक वाक्य सब पराये हैं कहने से आप आपके अपने हो जाते हैं।

अध्यात्म-नीति - 388

संबंधी-दोसा भासणे सदि, जदि संबंधी तुमत्तो ऊसरेंति, दु ते तुज्झ सगीया णत्थि, इदं जाण।।

कमियाँ अपनों की बताने पर, आपके अपने आपसे दूर हो जायें, तो समझना वे आपके अपने नहीं हैं।

अध्यात्म-नीति - 389

जदि संबंधी-दोसा कहणे सदि, तुवं सगीय-वेदमाणा तुज्झ दोसा भासेंति, दु ते तुज्झ सगीया णत्थि, इदं जाण।।

कमियाँ अपनों की बताने पर, आपको अपने लगने वाले आपकी ही कमियाँ गिनाने लग जायें तो समझना वे आपके अपने नहीं हैं।

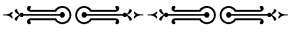

अध्यात्म-नीति - 390

जदि संबंधी-दोसा कहणे सदि तुज्झ संबंधिणो तुज्झ समीवे आगच्छेंति, दु जाणेसि ते हि तुज्झ सगीया।।

कमियाँ अपनों की बताने पर, आपके अपने आपके नज़दीक आ जायें, तो समझना वे ही आपके अपने हैं।

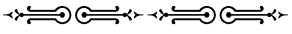

अध्यात्म-नीति - 391

तुज्झ लक्खं सदा संबंधिणो पडि वड्ढेसि, दु तुज्झ संबंधिणो तुज्झ होहिंति तहा सगं पडि वड्ढेसि, दु तुमं सगस्स होहिसि।।

कदम आपका हरदम बढ़े अपनों की ओर तो आपके अपने आपके बने रहेंगे और बढ़े अपनी ओर तो आप अपने ही बनें रहेंगे।

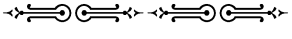

अध्यात्म-नीति - 392

पुरादण-दुह-विणासत्थं तहा सव्वदा सुहलाहत्थं तुवं सगेण सह हि वसेहिसि।।

हरदम का दु:ख मिटाने और सुख पाने के लिये, आपको अपने साथ ही रहना होगा।

अध्यात्म-नीति - 393

हे चेयण! मण-वयण-तणं च किंचणं पि तुज्झ णत्थि, चेयणादो जाण चेयणं, हुव चिरंतणं।।

मन-वच-तन कुछ भी नहीं तेरा चेतन, जान चेतन से चेतन, बन चिरंतन।

अध्यात्म-नीति - 394

जधत्थ-अजधत्थ-संबंधो कस्स केण अत्थि? इदं तदा तुज्झ जाणेहिसि, जदा तुज्झ संबंधीणं तुमत्तो सत्थपुण्णो ण होहिदि।।

असली नकली किसका किससे रिश्ता है, यह तब मालूम चलेगा जब आपके अपनों का आपसे स्वार्थपूर्ण नहीं होगा।

अध्यात्म-नीति - 395

तुमं संबंधीसुं णत्थि, तुम तुमम्हि एव, इदं वयणं सगं णायएहिं भासिदं।।

आप अपनों में नहीं, आप अपने में ही हैं, ये बात अपने को पहचानने वालों ने कही है।

अध्यात्म-नीति - 396

सग-संबंधो संबंधीहिं बंधकारणं तहा सगेण संबंधो णिब्बंध-कारणं।।

अपने संबंध, अपनों से बंध के कारण और अपने से, निर्बंध के कारण।

अध्यात्म-नीति - 397

जत्तो चदुग्गदि-भमणं मुंचेदु, ताइं कज्जम्हि चउरो हुवेहि।।

चतुर जरूर बनें उन कार्यों को करने में; जिनसे चतुर्गति भ्रमण छूटता हो।

अध्यात्म-नीति - 398

सगीय-जीवणस्स रीदि-णीदिं च एरिसं कुणेहि तुज्झ तुमत्तो कदावि ण मुंचेहि।।

अपनी जीवन रीति-नीति ऐसी बनाओ कि आपकी प्रीति आपसे कभी न छूटे।

अध्यात्म-नीति - 399

आणंद-सरोवरो सगं समया, किंचि तम्हि मज्जित्ता पस्सेहि।।

आनंद का सरोवर अपने ही पास है जरा! उसमें डुबकी लगाकर तो देखो।

अध्यात्म-नीति - 400

अहुणा संबंधीहिं सह णिवसणं ण इच्छामि, इदं ण बोल्लित्ता तुमं तुमम्हि हि वसेहि दु तुमं संबंधीदो सयमेव ऊसरेहिसि।।

नहीं रहना अब अपनों के साथ; यह न कहकर, आप अपने में ही रहने लगो तो आप अपनों से स्वयमेव दूर हो जायेंगे।

अध्यात्म-नीति - 401

संबंधीहिं पीदी सगत्तो पुहुत्तं कारेदि, कुण सगेण पीदिं, होहिदि संबंधीदो पुहुत्तं।।

अपनों से लगाव अपने से अलगाव करा रहा है, करो अपने से लगाव, होगा अपनों से अलगाव।

अध्यात्म-नीति - 402

जावं तुज्झ ववहारो संबंधीहिं होहिसि, तावं तुज्झ सगेण ववहारो ण होहिसि।।

जब तक अपनी अपनों से बनती रहेगी, तब तक अपनी अपने से नहीं बनेगी।

अध्यात्म-नीति - 403

संबंधीदो उदासीणत्तं सिक्खेहि, संबंधिणो वि सगेण सह ण गच्छंति।

उदास रहना सीख लो अपनों से, अपने भी अपने साथ नहीं जाते।

अध्यात्म-नीति - 404

संबंधिणो तुमम्हि णेव मेलंति, पुण किं संबंधीहिं मेलणं।।

अपने अपन में मिलते ही नहीं हैं, फिर क्यों मिलना अपनों से।

अध्यात्म-नीति - 405

चिंतं करंतं कुओ चिंताए बिंदू ण ऊसरेज्जा।।

चिंता करते-करते देखना कहीं चिंता की बिंदी न हट जाये।

अध्यात्म-नीति - 406

सग-सग-कम्माइं हि तुमं तुए सह जहा संबंधिणो सगेण सह णेंति।

अपन अपने साथ और अपने अपने साथ ले जाते हैं कर्म अपने अपने ही।

अध्यात्म-नीति - 407

जे सगम्हि ण गच्छेंति, ते हि संबंधीणं पच्छा धावंति।।

अपनों के पीछे वे ही लोग भगाते हैं, जो अपने में नहीं जा पाते हैं।

अध्यात्म-नीति - 408

सग-गुण-संपदा सगं समया खु अत्थि, ण दु संबंधिणो समया।।

अपनी गुण संपदा अपने ही पास है, अपनों के पास नहीं।

अध्यात्म-नीति - 409

तुए सह किंचण परगीया सगीय-सरिसा वसंति; तुमं ता ममत्त-पदत्तस्स तुडिं कदावि मा कुण।।

अपने साथ कुछ पराये अपने जैसे रहते हैं; आप उन्हें अपनापन देने की भूल कभी मत करना।

अध्यात्म-नीति - 410

सग-तुडि-उण्णयणं करेमि हं, जा सगीया मण्णीअ अदु ता परगीया करेमि हं।।

अपनी भूल का सुधार कर लिया है हमने, जिन्हें मानते थे अपना अब पराया कर दिया है उन्हें हमने।

अध्यात्म-नीति - 411

संबंधिणो तुवं सगीया तम्हा कहंते- णवरि तेसिं तुए कज्जं होदि।।

अपने, आपको अपना इसलिये कहते रहते हैं कि—उनका आपसे काम बनता है।

अध्यात्म-नीति - 412

मणणेण जाणेहि, वुड्ढत्त-आगमणे संबंधिणो वि किंचि संगं ण देहिंति।।

जरा ध्यान से समझना, जरा आने पर अपने भी जरा सा साथ नहीं देंगे।

अध्यात्म-नीति - 413

किं सव्वदा? खणमेत्तं पि कोवि संगी ण होहिदि।।

हर पल क्या? पल भर भी कोई साथ नहीं देगा।

अध्यात्म-नीति - 414

पुरादण-संबंधो खणमेत्त-तुडीए तुट्टेदि।।

हर पल का रिश्ता पल भर की गलती से टूट जाता है।

अध्यात्म-नीति - 415

संबंधिणो सगीय-करणस्स पयासस्स अवेक्खा तुमं सगीय-हवणस्स उज्जमं कुणेहि।।

अपनों को अपना बनाने की कोशिशें करने की अपेक्षा, आप अपना बनने की कोशिश करें।

अध्यात्म-नीति - 416

जदि संबंधिणो सगदोसं ण समारेंति, दु तुमं संबंधिणो उण्णयणस्स सग-दोसं समारेहि।।

अगर अपने अपनी भूल न सुधारें, तो आप अपनी अपनों को सुधारने की भूल जरूर सुधार लेना।

अध्यात्म-नीति - 417

संबंधीहिं सगीय-वत्ता हविज्जेदि, तम्हा विचिंतेहि संबंधीहिं संबंधी-वत्तं मा भासेहि।।

अपनों से अपनी बात होती रहे, इसलिये एक बात ध्यान रखना अपनों से अपनों की बात मत कहना।

अध्यात्म-नीति - 418

संबंधीणं झाणेणं सगज्झाणं ण होदि तहा सगज्झाणेणं संबंधीणं झाणं ण होदि।।

अपनों के ध्यान से अपना ध्यान नहीं होता और अपने ध्यान से अपनों का ध्यान नहीं होता।

अध्यात्म-नीति - 419

संबंधिणो अज्ज संति कल्लं ण होहिंति, णवरि तुमं सगीयो हवेज्जा दु तुमं सदेव होहिसि।।

आपके अपने आज हैं कल नहीं रहेंगे, लेकिन आप अपने बने रहो तो आप आज भी और कल भी रहोगे।

अध्यात्म-नीति - 420

सग-विसुद्धिं वड्ढित्ता हि कुण णियप्प-सुद्धिं।।

अपनी विशुद्धि बढ़ाकर, अपनी आत्मा की शुद्धि करना।

अध्यात्म-नीति - 421

तुमं संबंधीणं उत्तमं चिंतेसि, णवरि उत्तमं हवणं ण हवणं तेसिं सगीय-कम्मेसुं आधारिदं।।

सोच सकते हो अपनों के लिये अच्छा, लेकिन अच्छा होना न होना उनका अपने कर्मों पर निर्भर करता है।

अध्यात्म-नीति - 422

एगत्तं संबंधीहिं जोए सगं तोडेदि तहा एगत्तं सगेण जोए संबंधीदो सयल-संबंधा तोडेदि।।

'अकेलापन' अपनों से जुड़े रहने पर अपने को तोड़ देता है और 'अकेलापन' अपने से जुड़े रहने पर अपनों से सारे रिश्ते तोड़ देता है।

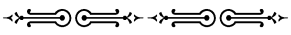

अध्यात्म-नीति - 423

संबंधिणो दुहं देंति, इदं भासणं तुज्झ तुडी, अदु भासेहि-सग-कम्माइं हि दुहं देंति दु जीवा भासेहिंति तुमं तुडिं समारेसि।।

अपने दु:ख देते हैं ये कहना भूल आपकी है, अब कहने लगो; अपने कर्म दु:ख देते हैं तो लोग कहेंगे उसने भूल सुधार की है।

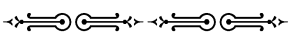

अध्यात्म-नीति - 424

सग-मेलणत्थं, संबंधी-मेलणं विमुंचेहिसि।।

अपने से मिलन के लिये, अपनों से मिलना छोड़ना पड़ेगा।

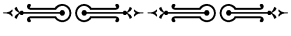

अध्यात्म-नीति - 425

बहिरंग-संसारेण सह जीवित्ता सग-संसारे जीवमाणो हि सग-संसारे जीवेदि।।

बाहर की दुनिया के साथ जीकर अपनी दुनिया में जीने वाला ही अपनी दुनिया में जीता है।

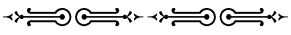

अध्यात्म-नीति - 426

संबंधिणो सग-कम्मेहिं दुहिदा, तुमं दुही होदूणं किं कम्मबंधं करेसि।।

अपने कर्म से दु:खी हैं अपने, अपन दु:खी होकर कर्म बंध क्यों करें?

अध्यात्म-नीति - 427

तुमं दुब्बलो, तम्हा दु तुमम्हि संबंधीणं अहिगारो अत्थि, ण दु तुज्झ।।

आप कमजोर हैं, इसलिये तो आप पर आपका नहीं, अपनों का जोर चल रहा है।

अध्यात्म-नीति - 428

जं किंचिवि दिस्सेदि तं तुज्झ णत्थि, जं तुज्झ अत्थि तं दिस्सदे णत्थि।।

जो कुछ भी दिख रहा है वह आपका नहीं, जो आपका है वह दिखता नहीं।

अध्यात्म-नीति - 429

दिट्ठं दिस्सेसि दु दिस्समाण-संसारे तुमं कदावि ण दिस्सेहिसि।।

देखनहारे को देख लोगे तो दिखने वाली दुनिया में आप कभी नहीं दिखोगे।

अध्यात्म-नीति - 430

संबंधीणं कज्जं करमाणो दुही होदि तहा सगत्थं कज्जं करमाणो सुही होदि।।

अपनों के लिये करने वाला दु:खी होता है और अपने लिये करने वाला ही सुखी होता है।

अध्यात्म-नीति - 431

संबंधीहिं तुवं मुंचित्ता उत्तमं किदं; इदं चिंतिय तुमं तुवं समया आगमिज्जसि।।

अपनों ने आपको छोड़कर अच्छा किया; यह सोचकर ही आप अपने पास पहुँच सकते हो।

अध्यात्म-नीति - 432

मलं दट्ठूणं पि सगचित्तं मा कुण मलिणं तुमं हि मयलिएहिसि।।

मल को देखकर भी आप अपना मन मलिन मत करो, आप ही मलिन हो जाओगे।

अध्यात्म-नीति - 433

तुमं णीरमिव सीयल-सहावी, तहेव हुवेहि; कसायाणलेण सगं मा तप्पेहि।।

आप पानी की तरह शीतल स्वभावी हैं, वैसे ही बने रहें; कषाय रूपी अग्नि लगाकर आप गरम न हों।

अध्यात्म-नीति - 434

तुमं संबंधी-विसए तहा संबंधिणो तुज्झ विसए विचिंतंते, तम्हा तुमं संबंधी-मज्झे पुणो पुणो आगमेसि।।

आप अपनों के बारे में और अपने आपके बारे में सोचते रहते हैं, इसलिये आप अपनों के बीच बार-बार आते रहते हैं।

अध्यात्म-नीति - 435

तुमं सग-विसए हि चिंतेहि दु संबंधीदो पुहुत्तं ण करिज्जेहिसि, पुहुत्तं होहिसि।।

आप अपने बारे में ही सोचने लग जाओ तो अपनों से दूरियाँ बनाना नहीं पड़ेंगी, दूरियाँ हो जायेंगी।

अध्यात्म-नीति - 436

सगेण सह वसित्तु संबंधिणो सगीयो ण होंति, णवरि तुमं सगेण सह वसित्तु सगीयो हविज्जेसि, तम्हा सगम्हि वसेहि।।

अपने साथ रहकर अपने अपने नहीं होते, लेकिन आप अपने साथ रहकर अपने ही हो सकते हो, इसलिये रहो अपने में।

अध्यात्म-नीति - 437

परगेहं गेण्हेदूणं तुमं सगीय-गेहं विसरेसि।।

पर-घर अपनाकर आप अपने ही घर को भूल गये।

अध्यात्म-नीति - 438

संबंधी-बंधणादो रक्खणत्थं सगं सगम्हि सगेण संजमेहि।।

अपनों के बंधन से बचने के लिये, अपने को अपने में अपने से बांध लो।

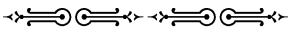

अध्यात्म-नीति - 439

सग-किरिया कम्मक्खय-कारणं, किण्णु सग-किरिया समीचीणा होदु।।

करनी अपनी, करती कर्मों की छटनी; पर हो करनी अच्छी अपनी।

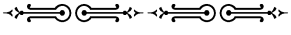

अध्यात्म-नीति - 440

सगीय-झुणिं सुणित्ता तुमं तुवं समया पहुप्पेसि तहा संबंधीणं झुणिं सुणित्ता तुमं सगत्तो पुहं होसि।।

अपनी आवाज़ सुनकर अपन अपने पास पहुँच जाते हैं और अपनों की आवाज़ सुनकर अपन अपने से दूर हो जाते हैं।

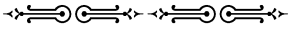

अध्यात्म-नीति - 441

सग-मुल्लं सद्देहिं ण कुणेहि, णवरि तुमं तेसु सद्देसु ण होसि, तुमं णिस्सद्दो।।

कीमत अपनी शब्दों से न करें, क्योंकि आप उन शब्दों में नहीं हो, आप नि:शब्द हैं।

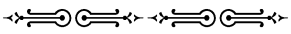

अध्यात्म-नीति - 442

जदा कदावि कोवि भासेदि- वयं तुज्झ णत्थि, तदा तुमं दुही ण होदूणं चिंतेहि- तुमं तुज्झ एव तुज्झ सगीयो कोवि णत्थि।।

जब कभी कोई अपना कहे कि—हम आपके नहीं हैं तब आप दु:खी न होकर; एक चिंतन अवश्य करें कि—आप अपने ही हैं आपका अपना कोई नहीं।

अध्यात्म-नीति - 443

अज्जपज्जंतं तुमं संबंधिणो मुणेदूणं संबंधीसुं सगं खयीअ, अदु तुमं सगं मुणेदूणं संबंधिणो खएदूणं सगम्हि रमित्ता कम्माइं खएहि।।

अब तक आपने अपनों को पहचानकर अपनों में अपने को खोया है; अब आप अपने को पहचानकर अपनों को खोकर अपने में खोकर कर्मों को खो जाओ।

अध्यात्म-नीति - 444

जदि तुमं दुही ण होदु दु तुमं किंचिवि मा कुण, मेत्तं सगसुहाणुहवं कुण।।

अगर दु:खी न होना हो तो आप कुछ मत करो; बस अपने सुख का अनुभव करो।

अध्यात्म-नीति - 445

सग-जीवणे संबंधी-रागो सुहं णूणं दुहं अहिगं देदि तम्हा सगरागं सगेण कुणेहि तहा दुक्खं हरेहि।।

अपनी ज़िंदगी में अपनों की बंदगी सुख कम दु:ख ज़्यादा लाती है, इसलिये अपनी बंदगी अपने से करो और दु:ख हरो।

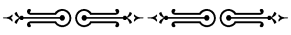

अध्यात्म-नीति - 446

णामो तुज्झ असासयो त्थि, तुमं तुज्झ कज्जं एरिसं कुणेहि तुमं हि सासयो हवेसि।।

नाम आपका शाश्वत नहीं है, आप अपने काम ऐसे करके चलें जाओ कि—आप ही शाश्वत हो जाओ।

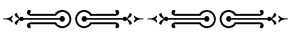

अध्यात्म-नीति - 447

सगीय-अत्थे सग-दिट्ठिं कुण, सग-जीवणं अणत्थादो सुरक्ख।।

अपने अर्थ पर अपनी दृष्टि ले जाओ, अपने जीवन को अनर्थ से बचाओ।

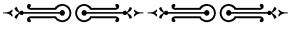

अध्यात्म-नीति - 448

सगट्ठाणे वसंतो हि सिद्धासणं लहेदि।।

स्वस्थान में रहनेवाला ही पाता है सिद्धासन।

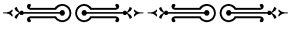

अध्यात्म-नीति - 449

सगीय-सुहं सगम्हि अत्थि, अणुहवित्ता तरेहि।।

अपना सुख अपने भीतर है, अनुभव करके तर।

अध्यात्म-नीति - 450

तुमं सगीयसुहं पस्सेहिसि, दु सगीयसुहलाहो झत्ति होहिदि।।

अपन अपना सुख देखने लग जायें, तो अपना सुख पाने में देर नहीं लगेगी।

अध्यात्म-नीति - 451

सगेण मेलमाणो संबंधीहिं मेलित्ता वि तेहिं ण मेलेदि।।

अपने से मिलने वाला अपनों से मिलकर भी अपनों से नहीं मिलता।

अध्यात्म-नीति - 452

तुमं संबंधिणो-सगीयो मुणित्ता सगं विसरेसि, तम्हा सुहं ण भजेसि दुहं हि भजेसि।।

आप अपनों को अपना मानकर अपने को भूल जाते हो, इसलिये सुख के स्थान पर दु:ख ही पाते हो।

अध्यात्म-नीति - 453

सगीय-झाणे सगो सगो हि आगमेदु, ण दु संबंधी; दु सगीय-सुहं तुमं झत्ति हु लहेहिसि।।

अपने ध्यान में अपन ही अपन आयें; अपने न आयें तो अपना सुख अपन शीघ्र ही पायें।

अध्यात्म-नीति - 454

संबंधिणो मुणेदुं एगहुत्तं संबंधीणं पडिऊलं वयणं भासेहि, पुण जाणेहिसि को सगीयो को परगीयो।।

अपनों को पहचानने के लिये; एक बार अपनों के प्रतिकूल बात कर देना, समझ आ जायेगा कि कौन अपना है कौन पराया।

अध्यात्म-नीति - 455

तुज्झ संबंधिणो तुवं दुक्खं देदूणं सदा पसासेंति—सगीया हि सगीये दुक्खं देंति णेव परगीया।।

हर बार मौका देते हैं आपके अपने आपको दु:ख देकर कि- आप पहचान लो कि- अपने ही अपने को दु:ख देते हैं पराये नहीं।

अध्यात्म-नीति - 456

संबंधी दुही तुमं दुही, संबंधी सुही तुमं सुही, इदं ववहार-कहणं।
णूणं संबंधी संबंधिम्हि सुही दुही तहा तुमं तुमम्हि सुही दुही।।

अपने दु:खी अपन दु:खी, अपने सुखी अपन सुखी, ये व्यवहार की बातें हैं। वास्तव में अपने अपने में सुखी दु:खी हैं और अपन अपने में सुखी दु:खी हैं।

अध्यात्म-नीति - 457

तुए हि संबंधीहिं ममत्तं दरिसित्तु संबंधीदो दुहं भजिदं- इमं सगदोसं गेण्हेहि।।

अपनी भूल स्वीकार कर लेना कि- आपने ही अपनों से अपनापन जताकर अपनों से दु:ख पाया है।

अध्यात्म-नीति - 458

संबंधिणो सगस्स मुणिय तुमं सगं वंचेसि।।

अपनों को अपना समझकर आप अपने को छल रहे हो।

अध्यात्म-नीति - 459

सगीयो होदूणं वसमाणो हि सगीयो हविस्ससि।।

अपना बनकर रहने वाला ही अपना बना रह पायेगा।

अध्यात्म-नीति - 460

अवरा सगीय-करणं सगं सगत्तो पुहुत्तकरणं जाणेहि।।

दूसरों को अपना बनाना; समझो अपने आप से दूर होना।

अध्यात्म-नीति - 461

सगेण सह वसमाणा ममत्तं तेण दरिसंति जेण तेसिं सत्थ-पुत्ती होज्जा, जदि ण मण्णेसि दु सत्थ-पुत्तिं मुंचित्ता पस्सेहि।।

अपने साथ रहने वाले अपनापन इसलिये दिखाते हैं कि–उनके स्वार्थ की पूर्ति होती रहे; न मानो तो स्वार्थ की पूर्ति करना छोड़कर देख लो।

अध्यात्म-नीति - 462

तुमं सगत्तो पुहं तेण होसि णवरि तुमं सगं मुंचित्ता संबंधीहिं हि ममत्तं दरिसेसि।।

अपने अपने से दूर इसलिये हो जाते हैं, क्योंकि आप अपने को छोड़कर अपनों से ही अपनापन दिखाते हैं।

अध्यात्म-नीति - 463

अज्जपज्जंतं संबंधी-आसयं लेदूणं जीवीअ मरीअ, अदु सगासयं लेदूणं सग-जम्मण-मरणं च ऊसरेहि।।

अभी तक अपनों का सहारा लेकर जीते मरते रहे; अब अपना ही सहारा लेकर अपने जन्म मरण को दूर करो।

अध्यात्म-नीति - 464

तुज्झ लक्खं संबंधीहि ममत्त-पदरिसणस्स णत्थि, अविदु सगेण ममत्त-पदरिसणस्स होदव्वं।।

अपना लक्ष्य अपनों से अपनापन जताने का नहीं, अपितु अपने से अपनापन जताने का होना चाहिये।

अध्यात्म-नीति - 465

जीवणं वणे गमणत्थं भजेदि, णेव भवणे णिवसणत्थं च।।

जीवन मिला है वन में जाने के लिये; न कि भवन में बिताने के लिये।

अध्यात्म-नीति - 466

भग्गवंता हि होंति भगवंता तहा सो हि भगवं जो णत्थि भग्गवं।।

भाग्यवान ही बनते हैं भगवान और भगवान वही है जो नहीं है भाग्यवान।

अध्यात्म-नीति - 467

जीवणे ण हसेहि ण रोच्छेहि मेत्तं मज्झत्थो होदूणं जीवेहि, पुणो जीवणं ण होहिसि कदावि सुण्णं।।

जीवन में न हसना न रोना बस मध्यस्थ होकर जीना, फिर जीवन नहीं होगा कभी भी सूना-सूना।

अध्यात्म-नीति - 468

सव्वेहिं मेलित्ता वि केणचिद ण मेलेहि मेत्तं अप्पेण मेलेहि दु णिए् हि परमप्पा भजेहिसि।।

सबसे मिलकर भी किसी से न मिलो केवल आत्मा से मिलो तो मिलेगा निज में ही परमात्मा।

अध्यात्म-नीति - 469

सव्वे विज्जत्थी होंति किण्णु विज्जत्थिणा सह अप्पत्थी विरला हि होंति।।

विद्यार्थी सभी बनते हैं, पर विद्यार्थी के साथ आत्मार्थी विरले ही जीव बनते हैं।

अध्यात्म-नीति - 470

अंतोमणेण मेलेहि णेव मणेण, णूणं तुमं झत्ति पहू होहिसि।।

मन से नहीं अंतर्मन से मिलो, तो भगवान बनने में देर नहीं लगेगी।

अध्यात्म-नीति - 471

किंपि वत्थुं चंचलसहावेण ण दीसेदि, अचलसहावेण भजेदि पदिदं वत्थुं तम्हा अचलो हुव ण दु चंचलो।।

चंचल-स्वभाव से नहीं दिखती वस्तु कोई; अचल-स्वभाव से मिल जाती है वस्तु खोई; इसलिये चंचल नहीं बनो अचल।

अध्यात्म-नीति - 472

परदंसणं पदंसणं च अणेगहुत्तं किदं, अदु एगहुत्तं सगदंसणं कुण, तो पुण परदंसणं पदंसणं च ण होदु।।

परदर्शन और प्रदर्शन अनेक बार किया, अब एक बार कर लो स्वदर्शन तो न हो फिर परदर्शन और प्रदर्शन।

अध्यात्म-नीति - 473

सगस्स सगत्तो मेलणं भूदत्थं पुण संबंधीहिं मेलित्ता अभूदत्थ-जीवणं किं जीवेसि।।

सच है अपना अपने से मिलना; फिर अपनों से मिलकर झूठा जीवन क्यों जीते हो।

अध्यात्म-नीति - 474

अज्ज सगसत्तिं जाणित्ता, परासत्तिं हरसेहि तहा णिय-परमप्पसत्तिं पयडेहि।।

आज अपनी शक्ति को समझकर, पर में आसक्ति घटा लो और निज परमात्म शक्ति को प्रकटालो।

अध्यात्म-नीति - 475

जं सगस्स अवगमणं आसी, तं तुमं ण जाणेसि; संबंधिणो सगस्स बोहीअ, ते कदावि तुज्झ ण होसी।।

अपना समझना था जिसे, उसे आप समझे ही नहीं; अपनों को अपना समझते रहे, जो कभी अपने हुये ही नहीं।

अध्यात्म-नीति - 476

सगत्थ-पहुं जाणेहि, इमत्तो संसारत्तो तम्हि संसारे गच्छेहि जत्थ णिएण णियं हि पावेसि।।

अपने भीतर के भगवान को पहचानो; चले जाओ इस दुनिया से उस दुनिया में जहाँ निज से निज को ही पालो।

अध्यात्म-नीति - 477

संबंधी-चिंतं मोत्तूणं सगं सगेण जोडेहि तहा संसारत्तो संबंधं तोडेहि।।

अपनों की चिंता छोड़कर अपने को अपने से जोड़ लो और संसार से संबंध तोड़ लो।

अध्यात्म-नीति - 478

संबंधीसुं लीणदाए हि सगं पडि गमण-लालसा णेव जग्गेसि।।

अपनों में मग्न रहने के कारण ही; अपने में जाने की लगन नहीं जाग रही है।

अध्यात्म-नीति - 479

अक्खरे दिट्ठी परदिट्ठी, अक्खे दिट्ठी णियदिट्ठी; इमा हि परादिट्ठी।।

अक्षर पर दृष्टि परदृष्टि अक्ष पर दृष्टि निज दृष्टि; यही है परादृष्टि।

अध्यात्म-नीति - 480

संबंधीसुं ममत्तभावो, सगीय-विभावभावो। सगम्हि ममत्तभावो, सगीय-सहावभावो।।

अपनों में अपनत्व भाव, अपना विभाव-भाव; अपने में अपनत्व भाव, अपना स्वभाव-भाव।

अध्यात्म-नीति - 481

सगं जावं गमणस्स एगो हि उवायो, संबंधीदो पुहं ण होदूणं मेत्तं सगं समया गच्छेहि।।

एक ही उपाय है अपने तक पहुँचने का; अपनों से दूर न जाकर केवल अपने पास जाओ।

अध्यात्म-नीति - 482

णियप्पस्स अधम्मादो रक्खणं णियप्पस्स वेज्जवच्चं।।

स्वात्मा की अधर्म से रक्षा, स्वात्मा की वैयावृत्ति है।

अध्यात्म-नीति - 483

संबंधीहिं सह जीविय संबंधीणं सगीय-हवणं कला, संबंधीहिं सह जीविय सगस्स हवणं महाकला।।

अपनों के साथ जीकर अपनों के बने रहना कला है, लेकिन अपनों के साथ जीकर अपने ही बने रहना महाकला है।

अध्यात्म-नीति - 484

जीवणस्स जत्ताए जदिवि सिविरं सुहासुहं च उवट्ठिदं, पुणो वि सगीय-लक्खं सदा सुद्धस्स होदव्वं।।

जीवन की यात्रा में भले ही पड़ाव शुभ-अशुभ आते रहें; अपना लक्ष्य हमेशा शुद्ध का रखना चाहिये।

अध्यात्म-नीति - 485

संबंधीदो तुज्झ अवेक्खाओ तुवं दुहं दिंतेहिंति, तम्हा ताणं अवेक्खाणं उवेक्खित्ता तुमं हवेहि सुही।।

अपनों से आपकी अपेक्षायें आपको दुःख ही देंगी, इसलिये उन अपेक्षाओं की उपेक्षा कर आप सुखी हो जायें।

अध्यात्म-नीति - 486

करण-करण-भावो विभावे अकरण-भावो सहावे य णेदि।।

करने करने का भाव-विभाव में ले जाता है, न करने का भाव स्वभाव में।

अध्यात्म-नीति - 487

सद्दा लेहणं पढणं अवगमणं च सरलं, कढिणं तहेव जीवणं।।

शब्दों को लिखना पढ़ना समझना सरल है, कठिन है वैसा जीवन।

अध्यात्म-नीति - 488

तुमं सगचित्तज्झुणिं सवणुज्जमं कुणेहि दु तुमं जाणेसि- बहिरंगज्झुणी तुज्झ समस्सा णत्थि, अविदु तुज्झ भव्वदं हि वड्ढेहिसि।।

आप अपने अंदर की आवाज़ सुनने का प्रयास करें तो आप पायेंगे कि बाहर की आवाज़ आपकी परेशानी नहीं, अपितु आपकी शान ही बढ़ायेगी।

अध्यात्म-नीति - 489

सगचिंतणे संबंधिणो आगमेंति, तम्हा दु होदि चिंता; जदि सगचिंतणे सगो हि आगमेहिदि दु चिंता णस्सेदि।।

अपने चिंतन में अपने आते हैं, इसलिये चिंता होती है; अगर अपन ही आने लगें तो चिंता मिटती है।

अध्यात्म-नीति - 490

तुमं सगीयो हि होज्जा, दु तुमं संबंधीदो पुहं वसेहिसि।।

अपने अपने ही बने रहें, तो अपन अपनों से दूर रहेंगे।

अध्यात्म-नीति - 491

संसारे णिवसण-कारणं संबंधीदो ममत्तं तहा संसारे वसित्तु वि संसारे अणिवसण-कारणं सगेण हि सगस्स ममत्तं अत्थि।।

संसार में रहने का कारण अपनों से अपनापन है और संसार में रहकर भी संसार में नहीं रहने का कारण अपने से ही अपना अपनापन है।

अध्यात्म-नीति - 492

केवचिरं चिंतेहिसि संबंधी-विसए, अदु विचिंतेहि सग-विसए।।

कब तक सोचते रहोगे अपनों के बारे में; अब सोचो अपने ही बारे में।

अध्यात्म-नीति - 493

तुवं सगसुहं तेण ण पसज्जीअ, णवरि तुमं अवर-सुहत्तो दुही तहा अवर-दुक्खत्तो सुही अत्थि।।

अपना सुख आपको इसलिये नहीं मिला, क्योंकि आप दूसरों के सुख से दु:खी हैं और दूसरों के दु:ख से सुखी हैं।

अध्यात्म-नीति - 494

ववहारं वड्ढेदूणं तुमं संबंधीदो सगीय-अहिणाणं खएसि।।

जान-पहचान बढ़ाकर आप अपनों से; अपनी ही पहचान खोते हैं।

अध्यात्म-नीति - 495

णियप्पधण-लाहत्थं, सग-परिणामाणं संसोहेहि; ण दु परस्स भावाणं।।

पर के नहीं, अपने ही परिणामों का संशोधन करो, स्वात्मधन पाने के लिये।

अध्यात्म-नीति - 496

णियप्पसोह-भावणाओ जग्गेहि, ण दु पडिसोह-भावणाओ य।।

प्रतिशोध नहीं निजात्म-शोध की भावनायें जाग्रत करें।

अध्यात्म-नीति - 497

सग-परियट्टण-पयासं कुण, पर-परियट्टण-पयासं मा कुण।।

दूसरों को बदलने का प्रयास नहीं, अपने को बदलने का प्रयास करें।

अध्यात्म-नीति - 498

सद्दे णत्थि तुज्झ णिस्सद्द-अप्पा पुणो किं तेसुं सद्देसुं रुंभेसि।।

शब्द में नहीं तेरा नि:शब्द, फिर क्यूँ उलझा रहता है उन शब्दों में।

अध्यात्म-नीति - 499

णिस्सद्दप्पं जाणित्ता सगजीवणं विसिलेसेहि, णवरि सद्देसुं तुमं णत्थि।।

जानकर नि:शब्द आत्मा को; सुलझा लो अपना जीवन, क्योंकि शब्दों में आप नहीं हैं।

अध्यात्म-नीति - 500

सगे वसित्ता सगणाणं सग-णिवसणं च अज्झप्पं, इमा हि अज्झप्प-पराकट्ठा।।

अपने में रहकर अपने को जानना और अपने ही रह जाना है अध्यात्म; यही है अध्यात्म की पराकाष्ठा।

।। इदि-अलं ।।

पसत्थी

सणादण-समण-सक्किदीए उण्णायगस्स महावीरसामिस्स महाण-परंपराए अणेगाणेग-सुदपुत्त-समणाइरिया समणविंदा जादा। इमाए हि परंपराए सव्वमण्णो णिद्दोसो सुहचरियावंतो जिणसासणभत्तो आइरिय-आदिसायरो आइरिय-महावीरकित्ति-सामी, आइरिय-विमलसायरो आइरिय-सम्मदिसायरो, आइरिय-विरागसायरो जादो त्ति। गणाइरिय-विरागसायरस्स पियग्ग-सिस्सो सक्किदिसासणाइरियो मे दिक्खा-सिक्खा-सव्वगुणपदायगो गुरू आइरिय-विसुद्धसायरो जादो।

पुज्ज-गुरुदेवस्स पिय-णाणी-झाणी-तवस्सी-सुदपुत्त-विणयवंत-समण-सिस्सेण ममाणुज-मुणिणा अपमिद-सायरेण अयं गंथो रइदं।

तेण अयं गंथो वीरणिव्वाण-2549 तमे फग्गुण-सुक्क-छट्ठी-तिहीए सणिवार-वासरे भरणी-णक्खत्ते साहिच्चिग-णयर-चिरगामे उत्तरप्पदेसे चंदणाह-जिणालयस्स भव्वसिलण्णास-महोस्सवे पारंभिदं।

मज्झकाले अण्ण-गंथ-संपादण-लेहणादो विहार-पंचकल्लाणपदिट्ठा-तित्थवंदणादो मज्झिम-सिंह णिक्कीडिद-णीरसवदतवयरणस्स मंगलकारणवसादो गंथलेहणे विस्सामो होसी। पुणो य गंथ-लेहणं वीरणिव्वाण-2549 तमे भीलवाडा णयर-चादुम्मासे मंगलभावेणेव सह पारंभिदं। एवं गुरु-आसीसेण वीरणिव्वाण-2550 तमे कत्तिगसुक्क-तेरहतिहीए सणिवारवासरे अस्सिणी-णक्खत्ते बारसम-दिक्खादिवसे भीलवाडा-वत्थणयरीए रायट्ठाणप्पदेसे संपुण्णो जादो अयं गंथो।

विज्जाविसणीपाइयविज्जापवीण-सुदसंवेगी-आदिच्चसायर-समणेण अस्स सेट्ठ-अज्झप्पणीदि-गंथस्स पाइयाणुवादं किदं। अस्स गंथस्स अणुवादकाले ममं थोवसमस्स विउल-अज्झप्पाणुहवस्स लाहो हवीअ। अयं गंथो पण्णासोत्तर-चदुसय (450) सिलोग-पमाणो त्थि। सुत्तावेक्खाए पंचसय-सुत्तपमाणो त्थि। जावं णहे तारा-आदिच्च-चंदो य, तावं अयं गंथो सणादण-समण-सक्किदीए दिप्पेज्जा। भविय-जीवेसुं अज्झप्प-विज्जा-पयासं करिज्जा।।

।। णमो णमो सिद्ध-साहूणं ।।

प्रशस्ति

सनातन श्रमण-संस्कृति के उन्नायक भगवान महावीर स्वामी की महती परंपरा में अनेकानेक श्रुतपुत्र-श्रमणाचार्य एवं श्रमणवृंद हुये। इसी परंपरा में **सर्वमान्य, निर्दोष, शुभचर्यावान्, जिनशासन-भक्त आचार्य आदिसागर जी, आचार्य महावीरकीर्ति जी, आचार्य विमलसागरजी, आचार्य सन्मतिसागर जी, आचार्य विरागसागर जी हुये। गणाचार्य भगवन् श्री विरागसागर जी के प्रियाग्र शिष्य संस्कृतिशासनाचार्य मेरे दीक्षा-शिक्षा सर्वगुणप्रदाता गुरु आचार्य विशुद्धसागर जी हुये।**

पूज्य गुरुदेव के प्रिय, ज्ञानी-ध्यानी, तपस्वी, श्रुतपुत्र, विनयवान-शिष्य ममानुज मुनिश्री अप्रमितसागर जी ने इस ग्रन्थ की रचना की।

उन्होंने यह ग्रन्थ वीरनिर्वाण संवत् 2549 में फाल्गुनमास की शुक्लपक्ष की छठ (6) तिथि में शनिवार भरणी नक्षत्र के काल में साहित्यिक नगरी चिरगांव उत्तरप्रदेश में श्री भगवान् चन्द्रनाथस्वामी के भव्य-जिनालय के भव्य-शिलान्यास महोत्सव के समय प्रारंभ किया था।

मध्यकाल में अन्य-ग्रन्थों के संपादन, लेखन, विहार, पंचकल्याणक, तीर्थवंदना और मध्यम सिंहनिष्क्रीडित-नीरस व्रत तपश्चरण के मंगलकारण-

वशात् ग्रन्थलेखन में विश्राम हुआ था। पुनश्च ग्रन्थलेखन वीरनिर्वाण संवत् 2549 में भीड़वाड़ा नगर के चातुर्मास में मंगलभाव के साथ ही प्रारंभ किया और गुरु-आशीष से वीरनिर्वाण संवत् 2550 कार्तिकशुक्ल त्रयोदशी तिथि में, 12वें दीक्षादिवस के दिन, शनिवार अश्विनी नक्षत्र में वस्त्रनगरी-भीलवाड़ा राजस्थान में यह ग्रन्थ संपूर्ण हुआ था।

विद्याव्यसनी, प्राकृतविद्याप्रवीण, श्रुतसंवेगी श्रमण आदित्यसागर जी ने इस महान् अध्यात्म-नीति ग्रंथ का प्राकृतानुवाद किया। इस ग्रन्थ के अनुवाद में मुझे अल्पश्रम और विपुल अध्यात्म का अनुभव प्राप्त हुआ। **यह ग्रन्थ 450 श्लोक प्रमाण है। सूत्रों की अपेक्षा इसमें 500 सूत्र हैं।**

जब तक नभ में तारागण, आदित्य (सूर्य) तथा चन्द्रमा हैं तब तक यह ग्रन्थ सनातन श्रमण-संस्कृति के नभ में चमकता रहेगा और भव्यजीवों में अध्यात्मविद्या का प्रकाश करता रहेगा।

॥ णमो णमो सिद्ध-साहूणं ॥

विशुद्धरत्न श्रुतप्रिय मुनि श्री अप्रमितसागर जी द्वारा रचित साहित्य-श्रम

I मौलिक रचना साहित्य—

*** प्राकृत भाषा में**

1. अप्पसारो
2. सम्मग्ग-चिंतणं
3. पणवीस-कल्लाण-भावणा
4. आदणाण-थुदी
5. विसुद्ध-थुदी
6. आदिच्च-थुदी
7. साहु-परमेट्ठि-थुदी
8. अज्झप्प-णीदी

*** संस्कृत भाषा में**

9. विशुद्ध-स्तवनम्
10-12. सुविशुद्धाष्टकं स्तोत्रम् 1,2,3
13. सुगुरुविशुद्ध-स्तवनम्
14. जिनवाणी स्तुतिः
15. श्री जिनचतुर्विंशति स्तोत्रम्

*** हिन्दी भाषा में**

16. वारसाणुवेक्खा
17. आदिनाथ स्तोत्र
18. जिन-जिनवाणी (3000 से अधिक पद्य)
19-21. साधुवचनं (हाईकू)-1,2,3
22. मनन
23. मंथन

24. मर्यादा
25. दशलक्षण
26. परिवर्तन
27. आत्मसृजन
28. सम्बोधन (क्षपक के लिये)
29. शब्द अपने
30. अपनी गूंज
31. अपनत्व
32. अहसास
33. संवेदनसही
34. मेरे गुरु (भाग-1)
35. मेरे गुरु (भाग-2)
36. मेरे गुरु (भाग-3)
37. संस्कार
38. उद्‌बोधन
39. उपदेश
40. उद्‌गार
41. अमृत मार्ग
42. शब्दामृत
43. मेरा जीवन
44. मंतव्य
45. लक्ष्य
46. अप्रमित है अहिंसा
47-51. समझे चेतन-1,2,3,4,5

II अनुवादित रचना साहित्य

प्राकृत भाषा में

52. विसुद्धवयणामिदं
53. तच्चबोहो
54. बोहि-सुत्तं
55. सार-सुत्तं

III संकलित साहित्य

56. व्यसन रहस्य
57. आदित्यवचनं
58. सम्बोधन

IV संपादित साहित्य में

59. भावत्रयफलप्रदर्शी (आ. श्री कुंथुसागर जी कृत)
60. धर्म परीक्षा (आ.श्री अमितगति स्वामी कृत)
61. सच्चत्थ-बोहो (आ. श्री विशुद्धसागर कृत)
62. झाणज्झयण-पाहुड (आ. श्री कुंदकुंदस्वामी कृत)

V श्रुतसंवेगी श्रमण आदित्यसागर जी कृत साहित्य का संपादन

63. वंदना-पथ
64. पुरानी बातें (भाग-1,2,3)
65. जीवन-सूत्र
66. शिक्षा-सूत्र
67. आदिच्च-किरिया-सायरो
68. आदिच्च-किरिया-सायरो
69. अंतर्ध्वनि
70. अंतर्मन की बातें
71. अपने लिये
72. कर्म-रहस्य (भाग- 1,2)
73. संकल्प
74. भक्तामर-विधान
75. आध्यात्मिक-प्रबंधन
76. ॐ Ignoraay नमः
77. घोर Ignoraay नमः
78. गुरु-शिष्य (भाग-1,4)
79. सही बातें (भाग-1-50)
80. जीवन नीति
81. स्तोत्र संग्रह
82. तीर्थंकर-विज्ञान